**LOPE DE VEGA  
*La Gallarda Toledana***

Personajes:

|  |  |
| --- | --- |
| *DON DIEGO DE ÁVALOS* |  |
| *MENDOZA, su criado* |  |
| *BERNARDA, dama* |  |
| *LEONARDO, su hermano* |  |
| *TIRSO, su criado* |  |
| *LARA, criado* |  |
| *ESTACIO, caballero* |  |
| *FELICIANO, caballero* |  |
| *DOÑA ANA, dama* |  |
| *ROSELA, criada* |  |
| *CLARINO* |  |
| *MONTALVO* |  |
| *ANDRONIO* |  |

|  |  |
| --- | --- |
| **Acto I** | |
|  | |
| *Salen DON DIEGO y MENDOZA, de camino* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mil veces seas, Mendoza, |  | | bienvenido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | No habrá sido |  | | menos veces bienvenido |  | | quien de tu presencia goza. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Vienes bueno? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | A tu servicio. | 5 | | ¿Vuesa merced cómo está? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Del alma y cuerpo te da |  | |  | | | | | |  | | | |  | | mi alegría claro indicio. |  |  |  |  | | ¿De la señora doña Ana |  |  |  |  | | no me dices nada? |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Creo | 10 | | que delante, su deseo |  | | montes y puertos me allana |  | | para que te llegue a dar |  | | esta carta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Gran ventura |  | | si mi esperanza asegura. | 15 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Tan segura puede estar, |  | | que me mandó que en su nombre |  | | te abrazase. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay tanto bien? |  | | *(Va leyendo don Diego la carta, en secreto)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Tú lo mereces también. |  | | ¡Por Dios que eres gentilhombre | 20 | | y que no la han engañado! |  | | Bien satisfaces tu fama, |  | | ni mereciera tal dama |  | | menos galán desposado. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues qué le dicen que soy? | 25 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Tan gallardo como noble; |  | | pero visto, éreslo al doble. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | En esa opinión estoy. |  | | Pésame, porque alabado |  | | y siendo lo que tú ves, | 30 | | cuando me vea después |  | | dirá que la han engañado. |  | | ¿No me escribe su tutor? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Así, por Dios, fue mi olvido; |  | | esta es suya, perdón pido. | 35 | | *(Dale otra carta)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No fue, por tu vida, error, |  | | que escribiéndome doña Ana |  | | fue justo olvidarte dél. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Un padre tienes en él, |  | | con amistad limpia y llana. | 40 | | Todas las dificultades |  | | que sobre el hacienda había, |  | | las allanó el mismo día |  | | contra algunas voluntades. |  | | Lee y advierte, que luego | 45 | | nos habemos de partir. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | La del tutor has de oír. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Dila en voz. | | *(Lee la carta)* | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | «Señor don Diego. |  | | Ya la partición se ha hecho, |  | | ya este pleito se acabó, | 50 | | que solo he querido yo |  | | de vuestra esposa el provecho. |  | | Todos estamos contentos |  | | de emplearla en vuestro igual, |  | | con seguro general | 55 | | de vuestros merecimientos. |  | | Con vuestro poder se hicieron |  | | las escrituras; de todo |  | | os dirá Mendoza el modo |  | | y quién son los que os sirvieron. | 60 | | Gozaréis una mujer |  | | como el sol». |  | | ¿Que es tan gentil? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Es un ángel. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | *(Lea)* | | «Veinte mil |  | | ducados vienen a ser |  | | los que os tocan, y las casas | 65 | | que están a San Agustín». |  | | ¿Que es bella? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Es un Serafín. |  | | ¡Vive el cielo que te casas |  | | con la mujer más hermosa |  | | que en Toledo se ha criado | 70 | | y el agua del Tajo ha dado! |  | | Blanco puro y tez lustrosa, |  | | pues discreta... No te puedo |  | | encarecer lo que siento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué más encarecimiento | 75 | | que decir que es de Toledo? |  | | Proseguiré lo demás. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Como quisieres. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | *(Lea)* | | «Partid |  | | luego de Valladolid». |  | |  | | | | | |  | | | |  | | No leo más. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Bien harás. | 80 | | Toma caballos y parte |  | | a gozar una mujer |  | | que no la supiera hacer |  | | con sus pinceles el arte. |  | | Porque puesto que es pintura, | 85 | | es como la poesía |  | | que pinta y habla. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué día |  | | llego a gozar su hermosura? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Si sales hoy, estaremos |  | | mañana en la noche allá. | 90 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Más presto el alma estará. |  | | Mendoza, ¿por dónde iremos? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Por Ávila, por las Navas, |  | | por el Escurial. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No importa |  | | ser la jornada más corta. | 95 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Ya entiendo; el camino alabas |  | | de Guadarrama y Madrid. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | En Madrid tengo que hacer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Si hay algo que proveer |  | | que falta en Valladolid... | 100 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Nada, pero tengo allí |  | | un amigo que querría |  | | llevar conmigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Algún día |  | | te detendrás? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es así, |  | | que no es bien ir a casarme | 105 | | tan solo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Tienes razón. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y más siendo obligación |  | | de tan buen amigo honrarme. |  | | ¿Que es mi señora doña Ana |  | | tan bella? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Dudoso estás? | 110 | | ¡Pues vive Dios, que no es más |  | | que de un cielo cifra humana! |  | | Deja señor esa duda, |  | | porque Toledo se precia |  | | de no tener fea necia, | 115 | | ni mujer hermosa muda. |  | | Y pues que la vas a ver |  | | cánsate del preguntar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Mendoza, no es dudar |  | | el repetir el placer! | 120 | | ¡Ay, pensamientos, no puedo |  | | negar que invidia me dais |  | | viendo que en un punto vais |  | | desde mi pecho a Toledo! |  | | Ni os impide Guadarrama, | 125 | | ni su aspereza os detiene, |  | | tal desasosiego tiene |  | | quien nunca ha visto a quien ama. |  | | ¡Oh, grande fuerza de amor! |  | | Digo, Mendoza, que creo | 130 | | que la fama y el deseo |  | | le engendran mucho mayor |  | | que la vista y la hermosura. |  | | Ea, partamos de aquí, |  | | que ver lo que nunca vi | 135 | | es lo que el alma procura. |  | | Llevaré de mis crïados |  | | los que mejor talle tengan. |  | | Vengan postas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Postas vengan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, si corrieran cuidados! | 140 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Mucho me huelgo de verte |  | | tan contento de casarte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Quien casa en tal alta parte, |  | | estima su buena suerte. |  | | Ponte en albricias aquí | 145 | | esta cadena y perdona. |  | | *(Dale una cadena)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | El oro tu mano abona, |  | | aunque es hierro para mí |  | | con que la traeré de esclavo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Porque yo lo vengo a ser | 150 | | de tan hermosa mujer, |  | | mi buena fortuna alabo. |  | | Y cual hombre tiene el suelo, |  | | que así la pueda alabar, |  | | que es acertarse a casar | 155 | | la mayor merced del cielo. |  | | | |
|  | |
|  |  |
|  | |
|  | |
| *(Vanse, y entren BERNARDA, dama, y ROSELA con sombrerillos de plumas y capotillos, LEONARDO, su hermano, y dos criados, ANDRONIO y TIRSO con una cesta de merienda, en la casa del Campo de Madrid)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Entre esa yerba poned |  | | esa merienda vosotros |  | | y adonde vamos nosotros |  | | de aquí a un hora la traed, | 160 | | que es parte más apacible. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues dónde quieres estar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Los estanques es lugar |  | | más fresco y más convenible. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANDRONIO | |  |  | | --- | --- | | No hay en la Casa del Campo | 165 | | sitio de mayor contento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TIRSO | |  |  | | --- | --- | | El vino es lindo elemento, |  | | entre estas matas le estampo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANDRONIO | |  |  | | --- | --- | | Coge, Tirso, desa fuente |  | | esta cantimplora de agua. | 170 | | *(Dásela)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TIRSO | |  | | --- | | Yo voy. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANDRONIO | |  |  | | --- | --- | | Primero la enjagua |  | | y refresca en su corriente. |  | | Pondré la nieve en la herrada |  | | mientras vas. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¡Hola! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANDRONIO | |  |  | | --- | --- | | Señor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Volvamos, será mejor, | 175 | | que está la puerta cerrada. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANDRONIO | |  |  | | --- | --- | | De los estanques lo está |  | | muy de ordinario, mas quiero |  | | ir a llamar al portero, |  | | que por esos cuadros va. | 180 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No entiendo que sin licencia |  | | del alcaide querrá abrir. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | A pedirla quiero ir, |  | | que es más fácil diligencia, |  | | que a la entrada del jardín | 185 | | estaba cuando llegamos. |  | | | |
|  | |
| *(FELICIANO y ESTACIO, galanes que vienen siguiendo a BERNARDA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Mejor cubiertos estamos |  | | deste esparcido jazmín. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Desde aquí la podrás ver |  | | sin que su hermano te vea. | 190 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Mucho el agua me recrea |  | | para no acabar de arder. |  | | ¡Ay, Estacio, quién pudiera |  | | ser un verdadero Ovidio |  | | de su pensamiento! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Invidio | 195 | | tu amor; si posible fuera |  | | transformáraste en Diana, |  | | gozaras tu dama ansí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Nunca tan airosa vi |  | | su hermosura soberana. | 200 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | El campo y el traje dél |  | | da a las damas gran donaire. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¡Quién fuera, cielos, el aire |  | | para transformarse en él! |  | | Ves aquí un campo de aquellos, | 205 | | que el Metamorfoseos pinta, |  | | mira esta famosa cinta |  | | de arroyos puros y bellos. |  | | Mira por esotra parte |  | | esos cuadros y vergeles | 210 | | compitiendo en los pinceles |  | | naturaleza y el arte. |  | | Mira aquella ninfa allí |  | | y que pudo su hermosura, |  | | pues en ser blanca y ser dura, | 215 | | es mármol y fuente aquí. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | ¡Oye, que se va su hermano! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Llave y licencia traeré. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | Aquí espero. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Volveré |  | | presto. |  | | *(Vase LEONARDO)* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Llega Feliciano. | 220 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | No te alteres de mirarme, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | Bernarda, en este jardín, |  |  |  |  | | que siendo honesto mi fin, |  |  |  |  | | mi amor te obliga a escucharme. |  |  |  |  | | Párate, si no es cruel | 225 |  |  |  | | que en el campo que estoy viendo |  |  |  |  | | quisieras ser Dafne huyendo, |  |  |  |  | | y entre mis brazos laurel. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién te ha dicho, Feliciano, |  | | mi venida? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | El corazón, | 230 | | que en sucesos de afición |  | | nunca profetiza en vano. |  | | Vi el coche a tu puerta, oí |  | | gran alboroto de fiesta, |  | | aunque ya por tu respuesta | 235 | | no lo ha de ser para mí. |  | | No quise preguntar más, |  | | que esto bastó. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Vete luego, |  | | si tu peligro y mi ruego |  | | bastan a volverte atrás; | 240 | | mira que mi hermano es hombre |  | | que no sufre libertades. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Ni tú, mi bien, mis verdades, |  | | con ser de mujer tu nombre. |  | | Si yo le viere volver | 245 | | también le diré que aguardo |  | | la llave, que no es Leonardo |  | | tu esposo o tú su mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Es mi hermano y a quien tengo |  | | en lugar de padre. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Agora | 250 | | conozco, ingrata señora, |  | | la desventura a que vengo. |  | | Cuando quisiese enfadarse |  | | yo diré que soy tu esposo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Entonces es más forzoso | 255 | | de tu locura enojarse. |  | | ¿Yo marido, sin su gusto |  | | de Leonardo? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Feliciano |  | | no tiene amor. Es en vano |  | | dar a Bernarda disgusto; | 260 | | vete y no le des enojos, |  | | que amor es solo querer |  | | el gusto de la mujer |  | | en que se ponen los ojos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, larga desdicha mía!, | 265 | | ¿cuándo acabará mi mal? |  | | Mas siendo el alma inmortal, |  | | no espere al alma este día. |  | | Tengo mis penas en ella, |  | | han de vivir, muerto yo, | 270 | | que esto tiene quien nació |  | | con tan desdichada estrella. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Graciosa lamentación, |  | | vete entre esos olmos verdes, |  | | que pienso que hablando pierdes | 275 | | después mayor ocasión. |  | | Que yo me retiraré |  | | de mi hermano y hablaremos |  | | donde con menos estremos |  | | te quiero escuchar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Sí haré, | 280 | | solo por obedecerte, |  | | que no por lo que has de hacer, |  | | porque he venido a creer |  | | que te deleita mi muerte. |  | | Plega a Dios que entre esas fuentes | 285 | | de tal manera te mires, |  | | que por ti misma suspires |  | | y que su espejo acrecientes. |  | | Plega a Dios que destos secos |  | | montes, que el sol abrasó, | 290 | | te venga a responder yo |  | | en enamorados ecos. |  | | Plega a Dios que vuelta en flor |  | | quedes por testigo aquí, |  | | de que te has amado a ti | 295 | | no teniendo a nadie amor. |  | | Ven Estacio. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿Así le dejas? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Sí, que es en pública parte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Lástima me da escucharte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | A quien no la dan mis quejas, | 300 | | no es menester que se apoyen |  | | en tu honrado proceder, |  | | que pueden enternecer |  | |  | | | | | |  | | | |  | | a las piedras que las oyen. |  |  |  |  | | | |
|  | |
| *(Vanse los dos)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | Cruel has andado. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿En qué? | 305 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | En no le escuchar con gusto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Quieres tú que ese disgusto |  | | hoy a Leonardo le dé, |  | | trayéndome solo aquí |  | | para alegrarme y servirme | 310 | | y no sabiendo decirme |  | | lo que pretende de mí? |  | | Responderé a sus papeles |  | | en cortesía, si ya |  | | mi amor obligado está | 315 | | a lo que decirme sueles. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Solo te digo que dar |  | | en esto lugar a un hombre |  | | debajo de honrado nombre, |  | | no ofende en ningún lugar. | 320 | | Alguna por recogida |  | | nadie sabe que nació, |  | | y por serlo se quedó |  | | sin casar toda su vida. |  | | ¿Nunca has visto los plateros | 325 | | colgar en aparadores |  | | todas las joyas mejores |  | | a los propios y estranjeros? |  | | Pues la joya de mujer, |  | | en estando retirada, | 330 | | ¿de quién ha de ser comprada |  | | si nadie la puede ver? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Cuando la joya es de fama |  | | con opinión de valor, |  | | luego lo sabe el señor, | 335 | | y para vella, le llama. |  | | Reniega de las mujeres, |  | | que en aparador están, |  | | que los hombres te dirán |  | | en qué estiman sus placeres. | 340 | | Yo sé que es su condición |  | | estimar lo que les cuesta, |  | | y que una mujer honesta |  | | se casa con la opinión. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Luego el sol pierde hermosura | 345 | | por salir todos los días. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No, pero saber podrías |  | | que no estiman su luz pura. |  | | Que cuando en invierno viene |  | | tras ocho días de ausencia, | 350 | | celébrase su presencia |  | | y en más estima se tiene. |  | | Toda dama cortesana |  | | tiene, huyendo la opinión, |  | | la condición del botón | 355 | | que está siempre a la ventana. |  | | Pero la que es principal, |  | | nunca su recogimiento |  | | le ha quitado casamiento. |  | | | |
|  | |
| *(Entran DON DIEGO, MENDOZA y LARA, criados, todos con botas y espuelas)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No he visto jardín igual; | 360 | | por bien empleado he dado |  | | el haberme detenido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | El de las postas se ha ido |  | | de esperar desesperado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿No ves que le dije yo | 365 | | que entrar en Madrid quería |  | | de noche? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Ya se volvía |  | | cuando Mendoza llegó. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Digo que le dije, Lara, |  | | que se fuese enhorabuena. | 370 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues por qué entrar te da pena |  | | de día? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Porque repara |  | | Madrid, después que no es Corte, |  | | en cualquiera caballero |  | | y por la posta no quiero, | 375 | | pues no hay para que me importe |  | | alborotar el lugar |  | | y que vayan a saber |  | | si ha de estar o ha de volver |  | |  | | | | | |  | | | |  | | mientras la vemos estar. | 380 |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Bien dices, pero por Dios |  | | que pensé que algo debías, |  | | por huir el rostro a los días. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No, por vida de los dos |  | | tú llevas un desposado, | 385 | | Mendoza, que no debió |  | | honra ni hacienda; que yo |  | | no tomo nada fïado, |  | | ni prestado lo he pedido |  | | y si juego, es mi dinero. | 390 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué gallardo caballero! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Sin duda es recién venido. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Señor, mira qué mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Calla, Lara, enhoramala |  | | que está, ni otra alguna iguala | 395 | | a la que vamos a ver. |  | | No la mires, anda acá, |  | | sal de la Casa del Campo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Soy yo emprenta que me estampo |  | | con cualquiera papel? Ya | 400 | | bien puedes dejarme ver. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | A tener tus ojos llave, |  | | te la echara. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mujer grave |  | | y muy hermosa mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué tan linda? ¡Por Dios vivo, | 405 | | que vale más un zapato |  | | de mi ama! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Espera un rato. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | El hombre es galán y altivo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Este debe de pasar |  | | de camino y quiso ver | 410 | | esta casa de placer, |  | | para alguno, de pesar. |  | | No es bueno que diera un dedo |  | | por saber si viene o va. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | ¿Piensas tú que toda está | 415 | | la gallardía en Toledo? |  | | Yo te digo que Madrid |  | | es reina de la hermosura. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Pregunta, si por ventura, |  | | camina a Valladolid, | 420 | | que cualquiera que se parte |  | | me pesa y más este hombre |  | | que es gallardo y gentilhombre. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Mendoza, señor, es parte. |  | | Yo digo que mi señora | 425 | | fea un propio serafín, |  | | pero esta en este jardín |  | | es la primavera ahora. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Lara dice bien, por Dios; |  | | mira, Mendoza, que es bella. | 430 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Es pudrirme, que iré a ella |  | | y la... |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¡Detente! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Los dos |  | | os debéis de concertar |  | | para darme estos enojos! |  | | ¡Vuelve, doña Ana, los ojos, | 435 | | desde ese hermoso lugar |  | | y abrasa con tu solsticio |  | | quien no te adora! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Recelo |  | | que ha de pedir a Juanelo |  | | otro segundo artificio. | 440 | | Desde Toledo a Madrid |  | | sus ojos han de abrasar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No me atrevo a preguntar |  | | si van a Valladolid. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Este hermoso capotillo | 445 | | y el de los ojos, Mendoza, |  | | algo tiene que retoza, |  | | desto que no sé decillo. |  | | El sombrero, el aire, el modo, |  | | por Dios, que obliga a mirar | 450 | | y no me puedes negar |  | | que viene con alma todo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Esta condición tenías? |  | | Tierno eres, yo he topado |  | | lindo humor de desposado; | 455 | | no saldremos en seis días. |  | | A no ser Casa de Campo |  | | de un rey, dijera, don Diego, |  | | que la abrasara. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mi fuego, |  | | ¿por qué no hallaras escampo | 460 | | que tiene aquesta mujer? |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Él es lindo Laumedón, |  | | a cada conversación |  | | una grúa es menester. |  | | Vámonos a ver la puente, | 465 | | que es un famoso edificio. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Dile aquello del solsticio, |  | | ansí Dios tu vida aumente |  | | porque le abrase esta tarde. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¡Deja, necia, hablaré yo! | 470 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | No me atrevo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué no? |  | | El cielo, señor, os guarde. |  | | *(Allégase a él)* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y guarde a vuestra merced. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Ya traban conversación; |  | | enfermo es del corazón. | 475 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Hacedme, señor, merced |  | | de decirme, si por dicha, |  | | vais a la Corte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Señora, |  | | de la Corte vengo ahora, |  | | y por dicha jamás dicha, | 480 | | pues entrando solo a ver |  | | estos jardines Reales, |  | | he visto esos celestiales |  | | ojos que me han de perder. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Mire que soy ballenata | 485 | | y ha poco que estaba aquí |  | | la Corte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mire que a mí |  | | soy cortesano y me mata. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Como eso suele matar |  | | a los que van caminando. | 490 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Soy bestia. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Fueme bridando |  | | el vocablo de matar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Sabe que no matarás |  | | es el quinto mandamiento? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Mátole yo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | El pensamiento. | 495 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿El pensamiento no más? |  | | Pues mande prender el mío. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No, sino vuestra belleza. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Pues prenda a naturaleza |  | | o escríbale un desafío. | 500 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay tal cosa? Muerto soy. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Que de la Corte venía? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y se conoce, a fe mía, |  | | en lo que cortado estoy. |  | | Aunque allá se fue la Corte | 505 | | y solo el yerro dejó, |  | | algún acero quedó, |  | | que tiene un poco de corte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Dónde va vuestra merced? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | A vuestra merced no más, | 510 | | que ni adelante ni atrás |  | | iré. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Rompa la pared. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Coces tengo de tirar, |  | | Jesús, con tanto desprecio, |  | | pues a fe que no era el necio | 515 | | de los que hay en mi lugar, |  | | envaine vuestra merced |  | | la espada por cortesía. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo, si la herida es mía? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Misericordia tened | 520 | | deste pobre caminante. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Adónde vais? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | A Toledo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Perdonadme, que no puedo, |  | | señor, pasar adelante, |  | | que viene mi dueño allí. | 525 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Sois casada? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No, por Dios, |  | | pero alguno como vós |  | | me estuviera bien a mí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Me estuviera bien a mí! |  | | ¡Vive Dios de no quitarme | 530 | | de donde estoy o matarme |  | | con quien me echare de aquí! |  | | | |
|  | |
| *(Sale LEONARDO, hermano de BERNARDA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hombre hablando con Bernarda? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Enfadado viene el hombre. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién es este gentilhombre | 535 | | que tan atento me aguarda? |  | | Lo que parece a don Diego |  | | de Ávalos. ¡Válgame Dios, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | si es él! |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Leonardo, sois vós? |  | | | |
|  | |
| *(Conócense)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿No me veis? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Llegad. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Ya llego. | 540 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Miren adónde nos vemos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Dónde, con botas y espuelas? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Hay un millón de novelas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Ni acá falta que os contemos. |  | | ¡Jesús, Jesús, qué mal hombre!, | 545 | | ¿cómo no me respondéis? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Siempre esa queja tenéis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues no es razón que me asombre? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No, que es río del olvido |  | | la Corte y falta lugar. | 550 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Para mí os ha de faltar |  | | siendo a mi amor tan debido? |  | | Volvámonos luego a Flandes, |  | | pesar de mí, que no había |  | | en toda su infantería | 555 | | otros amigos tan grandes. |  | | ¿Así os olvidáis allá |  | | de las viejas camaradas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | En colgando las espadas |  | | todo en un silencio está. | 560 | | ¡Vive Dios, que os he tenido |  | | en el alma y con deseo |  | | de serviros! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | No lo creo, |  | | pues no me habéis respondido. |  | | Que a fe, que si no muriera | 565 | | mi madre y quedara aquí, |  | | Diego, la que veis allí, |  | | que a la Corte a veros fuera. |  | | Mas no me puedo ausentar |  | | hasta casarla. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Haréis bien, | 570 | | aunque yo pensé también, |  | | solo en verla recatar |  | | que éradesvós su marido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Pluguiera a Dios que pudiera |  | | serlo y que yo mereciera | 575 | | lo que allí veis escondido, |  | | que es un alto entendimiento |  | | y una virtud singular. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Dios os la deje emplear |  | | con igual merecimiento. | 580 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | Llegadla a hablar. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es razón. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Bernarda, el señor don Diego... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No digáis más, pues yo llego |  | | a decir mi obligación. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Es mi dueño y lo ha de ser | 585 | | de nuestra casa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo os debo |  | | la vida, que en vós no es nuevo |  | | quererme favorecer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Seáis, señor, bienvenido, |  | | que el estaros obligado | 590 | | mi hermano, me lo ha contado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Estoy tan favorecido |  | | que casi estoy vergonzoso |  | | y me han salido colores, |  | | que sois dos a hacer favores | 595 | | y yo solo a ser dichoso. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | La sangre que habéis hallado, |  | | tan de vuestra parte ha sido |  | | que al rostro se os ha subido |  | | y deso estáis colorado. | 600 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Antes por esa razón |  | | descolorirme tenía, |  | | que si vuestra sangre es mía, |  | | bajárase al corazón. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Eso fuera a tener miedo | 605 | | y aquí muy seguro estáis. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Paz, señores. ¿Dónde vais, |  | | don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Voy a Toledo |  | | y he venido por Madrid |  | | solo a besaros las manos. | 610 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | No mienten los cortesanos, |  | | a lo que vais nos decid. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Iba a ver cierta señora |  | | con quien casarme quería. |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | ¡Ay de mí, Rosela mía! | 615 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿A casaros? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No sé agora. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Cómo no? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Nunca la vi. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Pues hermano, ver primero, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | no os compren con el dinero, |  |  |  |  | | como me quieren a mí; | 620 |  |  |  | | mas vive Dios que en las vistas |  |  |  |  | | dije volviéndome atrás: |  |  |  |  | | ¡*vade retro*, Satanás!, |  |  |  |  | | como hacen los exorcistas. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Bien decís, vós y yo iremos | 625 | | de aquí a diez o doce días, |  | | que estas no son niñerías, |  | | para que luego envidemos. |  | | ¡Ay, hombre, que en estos lloros, |  | | apenas a un avariento | 630 | | oye! Envido un casamiento |  | | con poco punto en los oros; |  | | cuando quiero le responde |  | | con el resto de la vida. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Si no es muy vista y oída | 635 | | la que más el rostro absconde, |  | | no lo aconsejo a ninguno. |  | | ¿Qué os da? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Veinte mil ducados |  | | con muchos deudos honrados |  | | y cerca del Rey alguno. | 640 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Iremos cuando queráis |  | | y yo acabaré una gala |  | | entretanto de una sala. |  | | Os suplico que os sirváis, |  | | donde a usanza de Madrid | 645 | | habrá alcoba y limpia cama |  | | aunque no tenga esa fama. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Que no replico, advertid, |  | | porque sois mi propio hermano; |  | | hablad con Bernarda un poco | 650 | | mientras a partir provoco |  | | cierto hidalgo toledano |  | | que me ha venido a llamar. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | Id en buenhora. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mendoza, |  | | lo que un amigo se goza | 655 | | cuando otro acierta a topar, |  | | que en los peligros lo fue, |  | | no tengo que exagerarte. |  | | A Toledo al punto parte |  | | y di que albricias te dé | 660 | | mi esposa, que antes de un mes |  | | iré a lo que está tratado. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Un mes? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Estoy obligado |  | | a los amigos que ves |  | | y no me siento muy bueno. | 665 | | Parte y dile que ya voy. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Al cabo de todo estoy; |  | | ni lo apruebo ni condeno. |  | | Liviano me has parecido; |  | | si habías de hacer casado | 670 | | lo que has hecho, habreme holgado |  | | de todo lo sucedido. |  | | Lo que me dices diré. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Mendoza, Mendoza, espera! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Si guardas desa manera | 675 | | palabras, firmas y fe, |  | | haré que se rasgue allá |  | | lo escrito! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Estás enojado? |  | | Ve y dile que mi cuidado |  | | no queda durmiendo acá, | 680 | | que más presto que tú piensas |  | | veré a mi esposa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Sí haré. |  | | *(Vase MENDOZA)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Fuese el necio? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Ya se fue. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué le he sufrido de ofensas? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | Quédaste aquí. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No lo escuso, | 685 | | ya al criado despaché. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Con descontento se fue. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | En contingencia me puso |  | | de perderos el respeto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Vámonos a merendar, | 690 | | que después habrá lugar |  | | de hablar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo os quiero en efeto. |  | | | |
|  | |
| *(Vase LEONARDO, y van saliendo FELICIANO y ESTACIO)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Vós a mí? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mirad, que tanto |  | | que he dejado de ir a ver |  | | mujer que era mi mujer. | 695 | | | |
|  | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | De vuestra intención me espanto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Señora, no os espantéis, |  | | pues una nave es más grave |  | | y hay quien detenga una nave. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues de mí qué pretendéis | 700 | | siendo casado? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No soy. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues a qué vais a Toledo? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No voy, pues dejarlo puedo, |  | | que a vós solamente voy. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Soy yo Toledo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Seréis. | 705 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Y si tan fuerte nací. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Cercaros todo, que ansí |  | | con el tiempo os rendiréis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No se rinde tal ciudad. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es muy ordinario haber | 710 | | en ciudades de mujer |  | | portillos de voluntad. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Pensáis de entrar por la mía? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | O morir en la demanda. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Seguilda, que mucho ablanda | 715 | | el servicio y la porfía. |  | | | |
|  | |
| *(Vanse los tres)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Haslo visto? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Bien lo vi. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¡Ah, gentilhombre! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién llama? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Un pariente desa dama; |  | | ¿mas de dónde viene aquí | 720 | | ahora ese caballero? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | De Valladolid. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Y está |  | | ahora de asiento allá? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | No mucho. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Estacio, hoy muero! |  | | ¿Cómo se llama? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Don Diego | 725 | | de Ávalos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¿A qué ha venido? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | No viene aquí. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Ya he tenido |  | | vida; mas oídme os ruego. |  | | ¿Va lejos? ¿Va acaso a Flandes? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | ¿Tan lejos quieres que fuera? | 730 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | No, señor, más cerca espera |  | | hacer hazañas más grandes. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Más cerca? ¿Dónde? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | En Toledo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues qué hazañas puede hacer? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Casarse, que es menester | 735 | | perder al peligro el miedo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Bien dijo, hazaña es casar; |  | | casar un lugar se llama |  | | donde un discreto de fama |  | | que le pudiera nombrar. | 740 | | Este equívoco escribió |  | | quien pasa por el casar, |  | | por todo puede pasar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Del lugar se aprovechó. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | ¿Mandáis más? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Esto quería. | 745 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | Adiós. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Él vaya con vós; |  | | consolado estoy por Dios |  | | de la pena que tenía. |  | | Ver que mientras aquí está |  | | aún no me faltan recelos. | 750 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Es condición de los celos, |  | | pero esta noche se irá. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Si la lleva a su posada, |  | | muerto soy. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Sí, que es galán. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Detrás de aqueste arrayán | 755 | | quiero ver mi muerte, amada. |  | | | |
|  | |
|  |  |
|  | |
| *(Vanse, y salen DOÑA ANA y CLARINO en Toledo)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Con el ordinario escribe |  | | que otro día se partía. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues ayer llegar tenía. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Detendrase si apercibe | 760 | | galas para esta ocasión |  | | y otras cosas necesarias. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Nacen sospechas tan varias |  | | de principio de afición. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues estás aficionada? | 765 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si es que mi esposo ha de ser, |  | | por fuerza habré de tener |  | | principios de enamorada. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CLARINO | |  | | --- | | ¿Sin verle? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ya no es sin ver, |  | | decirme dél tantas partes. | 770 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | En mi mocedad en artes, |  | | doña Ana, fui bachiller |  | |  | | | | | |  | | | |  | | y supe que no se amaba |  |  |  |  | | lo que no se conocía, |  |  |  |  | | mas que si su igual se vía | 775 |  |  |  | | lo ausente se imaginaba. |  |  |  |  | | Hombres has visto y ansí |  |  |  |  | | quieres un hombre como ellos. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo imagino algunos dellos, |  | | que de buenos talles vi, | 780 | | y formo en mi fantasía |  | | este rostro que ya quiero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Que vendrá esta noche espero, |  | | o mañana antes del día. |  | | Salir quiero a preguntar, | 785 | | si es que por Bisagra entró; |  | | por ventura se escondió |  | | por verte. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Estoy por pensar |  | | que has dado en lo que es más cierto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Los viejos sabemos más, | 790 | | mas si te ve como estás |  | | no saldrá ya del concierto. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, verdugo del alma, la esperanza! |  | | Quien sin desesperar un bien espera, |  | | no es hombre, es piedra, que una piedra en cera | 795 | | convierte la sospecha en la tardanza. |  | | Conozco, en fin, que quien espera alcanza, |  | | mas no hay bien, que si espero, le quisiera |  | | por no esperar, que la esperanza altera |  | | la paz del alma y la mayor bonanza. | 800 | | Consume la esperanza poco a poco |  | | la mejor sangre y de una en otra duda |  | | las enigmas difíciles retrata. |  | | ¿No te bastaba, amor, ser ciego y loco, |  | | sino engendrar a la esperanza muda, | 805 | | que no dice quién es hasta que mata? |  | | | |
|  | |
| *(Salga MENDOZA de camino)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Dame, señora, esas manos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús, Mendoza! ¿Tú eres? |  | | ¿No me abrazas? Pues no quieres, |  | | no son mis recelos vanos. | 810 | | ¿Qué es esto, tristeza en ti? |  | | No tengo que preguntarte |  | | porque con solo mirarte |  | | sé que a don Diego perdí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Ya fuera el agravio mucho. | 815 | | Consuelo el suceso tiene. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues dime, ¿don Diego viene? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Escúchame atenta. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Escucho. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Salió de Valladolid, |  | | Corte del tercer Filipo, | 820 | | don Diego de Ávalos y Arce |  | | para casarse contigo. |  | | Pasó el alto Guadarrama, |  | | desde cuyo frontispicio |  | | se ven los campos alegres | 825 | | de Manzanares, un río |  | | a quien da el nombre un lugar |  | | porque allí toma principio |  | | con Madrid, en bosques franco |  | | y en agua, aunque clara, esquivo, | 830 | | a cuya vista se mira |  | | entre mil olmos antiguos |  | |  | | | | | |  | | | |  | | la hermosa Casa del Campo, |  |  |  |  | | que este es su propio apellido, |  |  |  |  | | donde llegando a las tres, | 835 |  |  |  | | que quería entrar nos dijo |  |  |  |  | | de noche por escusar |  |  |  |  | | visitas de sus amigos. |  |  |  |  | | Y despidiendo las postas, |  |  |  |  | | entró en el verde edificio | 840 |  |  |  | | a esperar, en sus alhombras |  |  |  |  | | de la noche, el manto frío. |  |  |  |  | | Entramos por un jardín, |  |  |  |  | | a quien el agua de un risco |  |  |  |  | | a cada flor daba un caño | 845 |  |  |  | | entre arrayanes y mirtos, |  |  |  |  | | a una casa, aunque pequeña, |  |  |  |  | | lustrosa, que no han querido |  |  |  |  | | hacerla mayor los reyes, |  |  |  |  | | porque está en frente de un rico | 850 |  |  |  | | y suntuoso palacio, |  |  |  |  | | que siendo capaz en sitio |  |  |  |  | | de aposentar a su dueño, |  |  |  |  | | parece a la vista un brinco. |  |  |  |  | | Luego, los hermosos cuadros | 855 |  |  |  | | de la primavera, vimos; |  |  |  |  | | dechados de sus labores, |  |  |  |  | | sobre la tierra estendidos, |  |  |  |  | | cebando los libres ojos |  |  |  |  | | en violetas, en narcisos, | 860 |  |  |  | | rosas, azucenas, salvias, |  |  |  |  | | retamas, claveles, lirios; |  |  |  |  | | todos con hermosas fuentes, |  |  |  |  | | y de labores vestidos, |  |  |  |  | | de afeitadas ajedreas, | 865 |  |  |  | | de romeros y tomillos. |  |  |  |  | | Vimos unas salas de agua |  |  |  |  | | cuyos techos, guarnecidos |  |  |  |  | | de mil piedras, daban luces |  |  |  |  | | como rubíes y jacintos. | 870 |  |  |  | | Viste las paredes yedra |  |  |  |  | | con sus hojas y racimos, |  |  |  |  | | donde está la cueva antigua |  |  |  |  | | y el dios del agua marino, |  |  |  |  | | que sobre juncos y helechos, | 875 |  |  |  | | eternamente tendido, |  |  |  |  | | hace sudar a las piedras |  |  |  |  | | agua por dos mil resquicios, |  |  |  |  | | y cuya puerta acompañan |  |  |  |  | | dos ninfas, en sus dos nichos | 880 |  |  |  | | de mármol blanco, y de quien |  |  |  |  | | hiciera historias Ovidio. |  |  |  |  | | En medio deste jardín |  |  |  |  | | se ve de alabastro liso, |  |  |  |  | | la gran fuente que de Italia | 885 |  |  |  | | trujeron a Carlos Quinto, |  |  |  |  | | con ocho marinos dioses |  |  |  |  | | y cuatro desnudos niños, |  |  |  |  | | las águilas del Imperio, |  |  |  |  | | tres tazas, mil artificios, | 890 |  |  |  | | que si alcanzara esta edad |  |  |  |  | | enmudeciera Lisipo |  |  |  |  | | de ver diversos trofeos |  |  |  |  | | tan altamente esculpidos. |  |  |  |  | | Después de otros cenadores | 895 |  |  |  | | a diferentes caminos, |  |  |  |  | | vimos en medio de un mar, |  |  |  |  | | sobre una peña, un castillo |  |  |  |  | | a quien en torno asestados |  |  |  |  | | disparaban dos mil tiros. | 900 |  |  |  | | En vez de sus fuegos, agua, |  |  |  |  | | y en vez de balas, granizos. |  |  |  |  | | Por otras fuentes, después, |  |  |  |  | | a cuatro cuadros subimos, |  |  |  |  | | donde sabrosos frutales | 905 |  |  |  | | forman otro paraíso |  |  |  |  | | que parece que en cualquiera |  |  |  |  | | del manzano más propincuo |  |  |  |  | | se han de ver Eva y Adán |  |  |  |  | | en aquel engaño mismo. | 910 |  |  |  | | No digo por no cansarte |  |  |  |  | | lo que en esta casa he visto. |  |  |  |  | | No de sus estanques hablo, |  |  |  |  | | por cuyos cristales limpios |  |  |  |  | |  | | | | | |  | | | |  | | los cándidos cisnes nadan, | 915 |  |  |  | | y por cuyos fondos fríos, |  |  |  |  | | habitan carpas y tencas, |  |  |  |  | | como el ganado en apriscos, |  |  |  |  | | porque al llegar a sus bosques |  |  |  |  | | vio don Diego, tu marido, | 920 |  |  |  | | una mujer principal, |  |  |  |  | | lindo talle, gentil brío, |  |  |  |  | | hermana de un caballero |  |  |  |  | | con quien dice que ha vivido |  |  |  |  | | años en Flandes soldado. | 925 |  |  |  | | Háblanse los dos amigos |  |  |  |  | | y ofreciéndole su casa, |  |  |  |  | | muy demudado me dijo |  |  |  |  | | que ha de partirse a Toledo, |  |  |  |  | | tan locamente perdido, | 930 |  |  |  | | que dice que de aquí a un mes |  |  |  |  | | vendrá a verte. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Que no ha escrito |  | | don Diego y que en Madrid queda |  | | dese nuevo anzuelo asido? |  | | ¿Quieres que le culpe? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Sí | 935 | | pero no, que no te ha visto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué hombre es don Diego? ¿Podré |  | | dejarle? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Al hombre más lindo |  | | que ha hecho el cielo era justo, |  | | por este injusto delito, | 940 | | si fuera Toledo mudo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí, que Toledo ha sabido |  | | mi concierto y escrituras. |  | | Hablarán mis enemigos, |  | | que muchos, para quien yo | 945 | | fui, Mendoza, basilisco, |  | | viendo ocasión de venganza |  | | serán áspides conmigo. |  | | Llámame acá a mi tutor, |  | | pero no sepa Clarino | 950 | | la liviandad de don Diego. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Locura de mozo ha sido |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Dádome han el parabién, |  | | y en casa del Arzobispo |  | | todos saben, por mi pleito, | 955 | | que hoy espero a mi marido, |  | | ¿Hay tal desdicha? ¿Hay tal cosa? |  | | Pierdo, Mendoza, el juicio |  | | si se muriese don Diego; |  | | no va poco arrepentido. | 960 | | Ahora bien, esto es honor, |  | | ni mi tutor ni mi tío |  | | sepan dónde voy, Mendoza, |  | | que tú solo irás conmigo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Dónde, señora? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A Madrid. | 965 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | En varonil vestido. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Estás loca? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Estoy corrida, |  | | que en la mujer son principios. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Vuelve en ti, que la pasión |  | | te hace decir desatinos. | 970 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Mendoza, di que son hechos, |  | | que poco importaran dichos. |  | | Yo he de ir a Madrid, Mendoza, |  | | yo he de ver a mi enemigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Norabuena, pero en traje | 975 | | de tus pensamientos digno. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Cuando uno quiere vengar |  | | una afrenta, ¿no es arbitrio |  | | dejar el vestido propio |  | | y tomar otro vestido? | 980 | | Pues eso mismo haré yo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Que lo imagines te pido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tengo honra, no me detengo, |  | | tengo amor y no imagino. |  | | No me he de matar, que hay alma; | 985 | | yo no soy Porcia ni Dido, |  | | no es amor para cobardes. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Antes sí, que amor es niño. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si sabes que soy mujer, |  | | ¿qué me replicas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Replico | 990 | | por tu honor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Aguarda, esposo, |  | | no puedo decirte mío. |  | | | |
| **Acto II** | |
|  | |
| *Salen DON DIEGO Dávalos y MENDOZA, de camino* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Admírame que no escriba. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | No escribe porque te aguarda. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Queda buena? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Y tan gallarda |  | | que al Sol de sus rayos priva. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No sé, Mendoza, si pueda | 5 | | ir tan presto a nuestras vistas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Más de espacio la conquistas |  | | que el rey Alfonso a Toledo. |  | | Fuera de Valladolid, |  | | ¿qué disculpa habrá que intentes? | 10 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Siempre fue cárcel de ausentes |  | | este cielo de Madrid. |  | | Sus azules paramentos |  | | pintados de novedades, |  | | hasta en libres voluntades | 15 | | influye detenimientos. |  | | Mal anduviste en no hacer |  | | que me escriba. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | A quien ya viene, |  | | ¿para qué? Y más, si no tiene |  | | cartas a que responder. | 20 | | Tu venida ha confirmado |  | | no la haber tú escrito a ella. |  | | ¡Oh!, si la vieras más bella |  | | con un vestido rosado. |  | | Que sale por el Oriente | 25 | | el anunciador del día, |  | | dando mayor alegría |  | | que el alba su hermosa frente. |  | | Díjele tu enfermedad |  | | y enterneciendo los ojos | 30 | | vertió en sus claveles rojos |  | | de perlas gran cantidad, |  | | cuyas hermosas corrientes |  | | su boca intentó cogerlas |  | | porque guarde tales perlas | 35 | | el nácar de tales dientes; |  | | que si nacen de rocío |  | | en ellos se engendrarán. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Lejos estos necios dan |  | | deste pensamiento mío. | 40 | | Y este que tanto la alaba |  | | no conoce que me ofende; |  | | pero es mercader que vende |  | | y ningún concierto acaba. |  | | Estoy ya tan adelante | 45 | | en este mi nuevo amor, |  | | que este necio embajador |  | | temo que a Bernarda espante. |  | | ¡Ah, cielos!, qué presto muda |  | | la voluntad de opinión | 50 | | por mucho que la razón |  | | intente darle su ayuda. |  | | ¿Cómo podré deshacer |  | | la escritura de doña Ana? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Hoy nuestra esperanza vana | 55 | | quiere un imposible hacer, |  | | que entendido el pensamiento |  | | de don Diego, es disparate |  | | que más mi señora trate |  | | de esforzar su casamiento. | 60 | | En la puente la dejé, |  | | que hasta llevarla esta nueva |  | | no es justo que a entrar se atreva |  | | por muy oculta que esté. |  | | Dios sabe que la he reñido | 65 | |  | | | | | |  | | | |  | | el hábito que ha tomado, |  |  |  |  | | pero es amor desbocado |  |  |  |  | | cuando va siguiendo olvido. |  |  |  |  | | Y si en efeto es locura |  |  |  |  | | callar y seguir su amor... | 70 |  |  |  | | ¿Qué habemos de hacer, señor? |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Solo descansar procura, |  | | Mendoza, que has caminado, |  | | y hablemos después los dos. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Pues adiós. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Vete con Dios. | 75 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Harto bien me ha despachado, |  | | no me quejaré a lo menos, |  | | que me ha detenido aquí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿No te vas, Mendoza? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Sí, |  | | que de sueño tengo llenos | 80 | | los ojos, porque a las tres |  | | anoche salí de Illescas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Este por nuevas tan frescas |  | | querrá también su interés. |  | | Por cuenta de la cadena | 85 | | podrá poner estos pasos, |  | | que son diferentes casos |  | | los que amor de nuevo ordena. |  | | Vuelve a las doce a buscarme. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Rabiando de enojo voy. | 90 | | | |
|  | |
| *(BERNARDA en alto)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, señor don Diego! ¿Es hoy |  | | la partida? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Vino a darme |  | | este enfadoso escudero |  | | nuevas de aquella señora. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y de qué se trata ahora? | 95 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | De que tratarla no quiero; |  | | estoy muy de espacio aquí |  | | aunque apriesa me matáis. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Luego ya no os vais? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Si estáis, |  | | hermosa Bernarda, en mí, | 100 | | pregunta al alma, cuándo |  | | y si me parto o me quedo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y qué dirán en Toledo, |  | | donde os están esperando? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Esperen toda su vida | 105 | | hasta que su engaño vean, |  | | que yo voy, porque lo crean, |  | | dilatando mi partida. |  | | Más cerca hallé mi mujer |  | | de aquello que presumí. | 110 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Dónde la hallastes? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Aquí, |  | | porque vós lo habréis de ser. |  | | Que a no saber vuestro hermano |  | | mi tratado casamiento, |  | | con amigo atrevimiento | 115 | | le pidiera vuestra mano. |  | | Pero no quiero que antes |  | | que en Toledo esté deshecho, |  | | juzgue liviano mi pecho |  | | en negocios semejantes. | 120 | | Y porque era quedar mal |  | | casarme y no dar razón |  | | donde tuve pretensión |  | | con dama tan principal. |  | | Esto y ver tantos desvelos | 125 | | de tantos competidores, |  | | que invidiando mis favores |  | | me quieren matar de celos. |  | | Hace a mi bien resistencia |  | | y pone a mi mal temor, | 130 | | que es como cisne el amor, |  | | que no sufre competencia. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Competidores? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Ni fuera |  | | vuestro valor el que debe, |  | | si al sol, al agua, a la nieve | 135 | | menos deseos trujera. |  | | Pero vós entre los buenos |  | | amad, señora, el mejor. |  | | Pues tenéis tanto valor, |  | | estimaos ojos serenos | 140 | | porque en la opinión que estáis |  | | de hermosos y de atrativos, |  | | más os querrán por esquivos |  | | que si a cuantos veis, os dais. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Si yo no doy ocasión, | 145 | | ¿qué importan sus pretensiones? |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Con mirar dais ocasiones |  | | para tanta pretensión, |  | | y si ser dueños esperáis |  | | de alguno, es bien que miréis | 150 | | que menos dueños seréis |  | | mientras más dueños tengáis. |  | | Estad algún tiempo ajenos |  | | de piedad. Mirad con ira, |  | | porque si cualquiera os mira | 155 | | seréis tenidos en menos. |  | | | |
|  | |
| *(Salen FELICIANO y ESTACIO)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Propuesto traigo estos días |  | | que en viendo este hombre a estas rejas, |  | | ha de entender que mis quejas |  | | nacieron de sus porfías. | 160 | | Que no contento de ser |  | | huésped donde puede hablar, |  | | nos quiere a todos quitar |  | | la vista desta mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | ¿No decían que a Toledo | 165 | | iba a casarse? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | No sé. |  | | Mucho harán si saca el pie |  | | deste peligroso enredo. |  | | Días ha que vive aquí, |  | | tantos ha que me da celos. | 170 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Curarse de los desvelos |  | | es lo mejor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo ansí? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Hablándole en sana paz |  | | y diciéndole tu intento. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Querrá oírle? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Estará atento, | 175 | | si es de sentirle capaz. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | Voy. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Pues al campo le lleva, |  | | donde oiga el caso hasta el centro. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | Mi hermano viene. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Entraos dentro, |  | | gente viene, cosa nueva. | 180 | | Me parece el allegarse |  | | tanto aquel hombre a esta reja, |  | | ya se acerca, ya se aleja |  | | y comienza a demudarse. |  | | ¿Quiere vuestra merced algo? | 185 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Hablar a vuestra merced. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Dónde? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Tendré a gran merced |  | | que sea en el campo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Allá salgo. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | El hombre es hombre. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | No hay duda; |  | | desvíate un poco dél. | 190 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¡Recïo va! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Ve tras él. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | El paso y la color muda. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  | | --- | | ¿Temes algo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | A solo Dios. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  | | --- | | Él te guíe. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Aquí me espera; |  | | mal sufro, puesto que quiera | 195 | | que vayan solos los dos, |  | | seguirelos, que escondido |  | | desde algún árbol, verelos. |  | | ¡Cuánto pueden unos celos; |  | | es risa ausencia y olvido! | 200 | | | |
|  | |
| *(Entra DOÑA ANA, en hábito de hombre con botas y espuelas, y MONTALVO, criado)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Mira, Montalvo, si acaso |  | | parece por la calzada. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | No parece en ella nada, |  | | que todo el campo está raso. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Mendoza no considera | 205 | | que en el campo me dejó. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Si acaso en Madrid topó |  | | alguna moza parlera, |  | | habrá imitado a don Diego |  | | y en Madrid se habrá quedado. | 210 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Él tiene gentil cuidado |  | | en las cosas que le ruego. |  | | ¡Cielos!, ¿qué Madrid es este?, |  | | ¿qué liga tienen sus ramos |  | | que apenas hombre enviamos | 215 | | que menos cárcel le cueste? |  | | ¿Es por ventura la cueva |  | | de Salamanca? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | No sé; |  | |  | | | | | |  | | | |  | | allá enhoramala fue |  |  |  |  | | el nuestro peci de Esgueva. | 220 |  |  |  | | Mas por Dios que no ha sabido |  |  |  |  | | el laberinto de Creta. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | En un alma tan discreta |  | | debe de estar escondido. |  | | Ojos con que adormeciera | 225 | | puesto en razón estuviera, |  | | mas no que sin filos corte; |  | | tanto bueno le ha quedado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Madrid, señora, parece |  | | a un rico, que aunque empobrece | 230 | | queda en razonable estado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Como es grande, estanle mal |  | | calzones a lo flandesco. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Aquí corre viento fresco, |  | | siéntate en este arenal | 235 | | que solía ser el río |  | | que se llama Manzanares, |  | | que duerme en caniculares |  | | y despierta en tiempo frío. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo puedo sosegar? | 240 | | Ve a Madrid, Montalvo, corre. |  | | La soledad me socorre, |  | | bien puedo sola quedar. |  | | Busca en casa de Leonardo, |  | | que es donde don Diego posa | 245 | | a este necio que reposa |  | | cuando yo me abraso y ardo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  | | --- | | ¿Dónde vive? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A la Pasión, |  | | que es donde a mí me la dan. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Sé que a cuantos allá van | 250 | | les da mal de corazón. |  | | No querría, por Dios vivo, |  | | quedarme también allá. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Temiéndolo quedo ya. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Ora bien, voy por tu olivo, | 255 | | que quiero ser la paloma |  | | desta fiera tempestad. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Y vendrá? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Con brevedad. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Camina. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Consuelo toma. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Bosque del río de Madrid, no puedo | 260 | | hallarme en vuestras verdes soledades, |  | | enseñada a decirle mis verdades |  | | al gran Tajo, corona de Toledo. |  | | Olmos, bien sé que en vuestros ramos quedo, |  | | presa en venganza de otras libertades, | 265 | | que se suelen mudar las voluntades |  | | y de las esperanzas nace el miedo. |  | | Conocedme por hombre, fuentes claras, |  | | que quien ha de sufrir ha de ser hombre; |  | | y tú, que vas huyendo a quien te sigue: | 270 | | ya que eres mi fortuna, ¿por qué paras? |  | | Mas como soy mujer, temes el nombre |  | | que olvida amada y con desdén persigue. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Pare aquí vuestra merced, |  | | que basta pasar la puente | 275 | | donde ya no hay tanta gente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sauces, mi cuerpo esconded, |  | | que vienen aquí dos hombres. |  | | ¡Parados se han! ¿Qué querrán? |  | | Pero de pendencia están; | 280 | | ea, brazo, no te asombres, |  | | ya eres de hombre, vive Dios, |  | | que he de hacer lo que me toca. |  | | | |
|  | |
|  | |
| *(Entra ESTACIO)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | ¡Cuánto el amistad procura!, |  | | pues voy sirviendo a los dos | 285 | | contra el término debido |  | | y el honor de Feliciano. |  | | Pero no ha sido en mi mano. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Decidme a lo que he venido. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿De dónde sois? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | A la puerta | 290 | | me lo preguntó la guarda, |  | | que sospecho que se guarda, |  | | aunque es la sospecha incierta. |  | | En el campo no hay a quien |  | | deba decille quién soy, | 295 | | hasta decir que aquí estoy |  | | y que soy hombre de bien. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Yo os hablo con cortesía. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y yo la tengo con vós. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Importa el hablar los dos | 300 | | algo que ya es honra mía |  | | y aunque vós no me digáis |  | | quién sois os lo diré yo. |  | | Para que el que aquí os sacó |  | | y porque ocasión sepáis | 305 | | yo me llamo Feliciano, |  | | soy Ramírez de Madrid. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo soy de Valladolid, |  | | a lo castellano llano |  | | y para decirlo en breve, | 310 | | don Diego Dávalos soy, |  | | que en aquella casa estoy. |  | | ¿De estar allí qué se debe? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Débese considerar, |  | | que puede dueño tener. | 315 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay allí alguna mujer |  | | que vós podáis sujetar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Sujetar no, mas podría |  | | ser mi mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Si lo es, |  | | respetarela después | 320 | | que sea vuestra, pues no es mía. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Esta palabra me ha dado |  | | Bernarda. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Pues no es razón |  | | que yo impida posesión |  | | a un hidalgo tan honrado. | 325 | | Servilda, que yo os la doy |  | | de no pretendella. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | En todo |  | | mostráis el hidalgo modo |  | | de quien sois. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Muy vuestro soy. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Esto quería no más, | 330 | | adiós. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Esperad un poco. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Queréis algo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No revoco |  | | la fe, ni lo haré jamás. |  | | Pero habiendo aquí salido, |  | | ¿cómo quedaré también | 335 | | con el lugar, si con quien |  | | me ha sacado no he reñido? |  | | Meted mano a vuestra espada. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Jamás hombre me pidió |  | | que la desnudase yo | 340 | | que la tuviese envainada. |  | | | |
|  | |
| *(Echa mano y llega ESTACIO)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | Aquí tienes un amigo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Que fue traición advertid. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Nunca hombre de Madrid |  | | fue traidor, ni yo contigo. | 345 | | Estacio, vete en buenhora. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  |  | | --- | --- | | ¡No habéis de reñir, por Dios! |  | | | |
|  | |
| *(Llega DOÑA ANA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues estemos dos a dos, |  | | que yo sé quién se mejora. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Quién sois, caballero? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Un hombre | 350 | | que vio aquesta sinrazón. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Qué os mueve? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sola afición, |  | | que apenas sé vuestro nombre. |  | | Porque desde donde estaba |  | | ninguna cosa entendí. | 355 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo os agradezco que aquí... |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué aguardas, villano? ¡Acaba! |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Me queráis favorecer; |  | | teneos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Es imposible, |  | | pícome de lo terrible | 360 | | en llegando que ha de ser. |  | | Vuestra merced se desvíe; |  | | matarele aquellos dos. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Juntos los dos? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí, por Dios. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¡Oh, qué bien! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué se ríe? | 365 | | Que si le tomo la risa |  | | por blanco de furia tanta |  | | de su cobarde garganta, |  | | haré la espada camisa. |  | | ¡Fuera digo! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Deteneos, | 370 | | pesar de quien me vistió, |  | | que también soy hombre yo! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo también en los deseos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Sosiéguese, gentil hombre, |  | | mire que es mozo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí, soy, | 375 | | y aunque sin barbas estoy, |  | | soy tan hombre como otro hombre. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿De dó bueno? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Toledano, |  | | que puede decir y hacer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Vós me obligáis a tener | 380 | | queda la espada y la mano, |  | | que habéis tomado tal furia |  | | que solo por deteneros |  | | he bajado los aceros |  | | que levantaba la injuria. | 385 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Por qué razón? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Porque quiero |  | | que no riñáis por mí aquí. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues quiero reñir por mí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ESTACIO | |  | | --- | | Paso, hidalgo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Caballero |  | | soy y me pondré mañana | 390 | | la de Calatrava al pecho, |  | | que su Majestad me ha hecho |  | | merced. *(Aparte)* ¡Ay, pobre doña Ana! |  | | ¿Adónde tienes el seso? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | A vuestras mercedes pido | 395 | | dejen esto, pues ha sido |  | | de todo el mejor suceso, |  | | que por allá nos veremos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Donde quiera que queráis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo? ¿Que ansí los dejáis? | 400 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Quedito, no hagáis estremos. |  | | | |
|  | |
| *(Váyanse envainando)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿No me dejaréis pelar |  | | aquel par de gallinillas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Fío de vós maravillas |  | | pero volved a envainar | 405 | | que ya los hombres se han ido |  | | y decidme qué os movió. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Vuestro talle me obligó, |  | | que parecéis bien nacido. |  | | Y el ver que saliesen dos | 410 | | para un hombre. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Envainad ya. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Digo, que envainado está. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Confieso que os debo a vós |  | | la vida. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Burlas? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Oíd. |  | | ¿Botas y espuelas traéis? | 415 | | ¿Vaisos, por dicha, o tenéis |  | | algo que hacer en Madrid? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Aquí he de estar ocho días, |  | | que un hombre vengo a buscar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Conmigo habéis de posar. | 420 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | No, por Dios. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Vanas porfías. |  | | Aquí soy huésped también. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | No he visto hombre más gallardo; |  | | ¡ojalá que el que yo aguardo |  | | me pareciese también! | 425 | | Por Dios que si con él voy |  | | y me arrimo un poco al fuego, |  | | que he de ser como don Diego |  | | y quedarme donde estoy. |  | | ¡Qué gracia de desposados; | 430 | | todos, donde van, se quedan! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Si los cuidados se heredan, |  | | este hereda mis cuidados. |  | | Porque si Bernarda ha sido |  | | tan libre con Feliciano | 435 | | y ya le ha dado la mano |  | | de que ha de ser su marido |  | |  | | | | | |  | | | |  | | no tengo que pretender. |  |  |  |  | | Mas por hacerle pesar |  |  |  |  | | quiero a su casa llevar | 440 |  |  |  | | quien tantos le puede hacer. |  |  |  |  | | Este mancebo es gallardo, |  |  |  |  | | más que en mi vida le vi, |  |  |  |  | | seré su tercero allí |  |  |  |  | | y que la enamore aguardo, | 445 |  |  |  | | de suerte que no la goce |  |  |  |  | | el villano Feliciano. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Ved el ciego error humano, |  | | hoy ninguno me conoce |  | | y era en Toledo mujer | 450 | | no ha dos días tan querida |  | | de muchos, cuanto ofendida |  | | de quien me ha quitado el ser. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mientras en la villa entramos |  | | quiero que sepas la historia | 455 | | desta pendencia. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | ¡En qué gloria, |  | | ojos atrevidos, vamos! |  | | Plegue al cielo que don Diego |  | | con quien quisiere se case |  | | y que la escritura abrase, | 460 | | y entrambas firmas mal fuego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Cómo es tu nombre? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Don Juan. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Pues oye, don Juan. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | ¡Ah, cielos!, |  | | ya comienzo a tener celos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Verás en qué punto están | 465 | | los pasos por donde fui |  | | tan dichoso y desdichado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Sin duda está enamorado, |  | | yo soy muerta. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Escucha. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Di. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Traté por cartas, don Juan, | 470 | | un casamiento en Toledo |  | | tan rico... |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Válame Dios! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué te pones suspenso? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Dejé en Toledo unas cartas |  | | que eran todo mi remedio. | 475 | | Prosigue, enviaré por ellas. |  | | Di, por tu vida: ¿ya es hecho? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tan rico, noble y honrado |  | | que cualquiera caballero |  | | pudiera tener a dicha | 480 | | tan honrado casamiento. |  | | Hubo pleito en los principios, |  | | pero sosegose el pleito, |  | | que era hacienda de menores |  | | y pesadumbre entre deudos. | 485 | | Di poder, hice escritura, |  | | firmela y en este tiempo |  | | envié de espada un hombre en efeto. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Adónde? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | A Valladolid. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Qué es esto, cielos? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No creo | 490 | | que escuchas de buena gana. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Gana de escucharte tengo |  | | pero pensando en las cartas |  | | tal vez el alma divierto. |  | | Di, adelante, por mi vida, | 495 | | válate Dios, por el pliego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Hallástele? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | No, prosigue |  | | y di el paje o escudero |  | | cómo se llamaba acaso. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Mendoza. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué estoy oyendo? | 500 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Con este y otros criados, |  | | galas, plumas y deseos, |  | | demás colores y jaspes, |  | | que puesto el sol tiene el cielo, |  | | parto de Valladolid | 505 | | y paso alegre y contento |  | | las cumbres de Guadarrama, |  | | que fue deste parto el puerto. |  | | Llego a Madrid y a la entrada |  | | a ver los jardines entro, | 510 | | obra insigne del Segundo, |  | | para Felipe Tercero. |  | | Vi una dama y porque diga |  | | de amor los altos efetos, |  | | en un instante tras sí | 515 | | me llevó los pensamientos, |  | | de suerte que hasta las flores |  | | que pisaban sus pies tiernos |  | | quisiera que fueran almas |  | |  | | | | | |  | | | |  | | que salieran de mi cuerpo. | 520 |  |  |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Tan presto? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Lo que es milagro |  | | hace sus efetos presto. |  | | Fue milagro su hermosura |  | | y en los milagros no hay tiempo. |  | | Era su hermano mi amigo, | 525 | | llevome a su casa y luego |  | | que vieron mis esperanzas, |  | | celajes de mi remedio, |  | | envié el paje a mi posada |  | | diciendo que estaba enfermo, | 530 | | y no le mentí, por Dios, |  | | pues que me dio mal de fuego. |  | | Olvideme de mí propio, |  | | cuanto más de los conciertos, |  | | y como ladrón de casa, | 535 | | hice llaves a su pecho. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Agravio hiciste a tu esposa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No la nombres si eres cuerdo, |  | | pues fue esposa de mis manos |  | | y no de mis pensamientos. | 540 | | Demás de que no la agravio |  | | pues no la he visto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo creo que la tuvieras amor |  | | si tiene merecimientos, |  | | que me pareces un poco | 545 | | levantado de celebro. |  | | Perdona, que soy tu amigo, |  | | si esto ha sido atrevimiento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Pudiera ser que la amara |  | | y que me castiga el cielo. | 550 | | Voy, don Juan, imaginando, |  | | en el fin de mi suceso. |  | | Hoy el hidalgo que viste |  | | me sacó al campo... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sospecho |  | | que quiso hacerte traición, | 555 | | pues no vino cuerpo a cuerpo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Díjome que era su esposo. |  | | Yo, viendo, don Juan, el dueño, |  | | conocí su liviandad. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Y era bastante el ejemplo | 560 | | y aunque por ser yo tan mozo |  | | y no pedirme consejo |  | | me juzgues por loco, escucha |  | | lo que te digo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No puedo, |  | | que ya sé que me dirás | 565 | | que deje este loco intento |  | | y vaya a ver a mi esposa. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿No podrás? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No, que estoy ciego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Pues qué has de hacer? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tú eres hombre |  | | mozo, galán, caballero; | 570 | | llevarte quiero a su casa |  | | y entenderás lo que emprendo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Enamora esta dama, |  | | que yo quiero ser tercero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Miren por dónde se traza | 575 | | que aquí todos nos quedemos! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo le contaré tus partes. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Pues qué pretendes? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Pretendo |  | | que la pierda Feliciano, |  | | por quien tengo tantos celos. | 580 | | Y aun si te quieres casar, |  | | aunque te cruce los pechos |  | | la de Calatrava, tiene |  | | mayores merecimientos |  | | y de quince mil ducados arriba. | 585 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Cïerto? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es tan cïerto |  | | como que tú eres don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tendrá muy poco dinero. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Que si me casas |  | | con tan divino sujeto | 590 | | te daré mujer más noble |  | | en dote, en sangre y en deudos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tomarela de tu mano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Encaja los mandamientos; |  | | esta por ella te doy. | 595 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y yo digo que la acepto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Vamos a ver esa ninfa; |  | | verás que al primer requiebro |  | | la convierto en puro azúcar |  | | y doy con ella en el suelo. | 600 | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Fïado voy de tus partes; |  | | yo pienso hacer un enredo |  | | con que ninguno la goce. |  | | Altas esperanzas llevo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Válgame Dios lo que pasa | 605 | | por el mundo! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué tenemos? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Las cartas que había perdido, |  | | hallé ahora. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo me huelgo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Tu nombre? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Don Diego. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Vamos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Brava pierna, lindo cuerpo. | 610 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Así hemos de ser los hombres: |  | | mirar alto y pisar recio. |  | | Del pie al cabello soy alma |  | | porque en viendo un hombre destos |  | | se arrojan de las ventanas, | 615 | | como a guindas tordos nuevos. |  | | Soy fuerte como una roca, |  | | como una pluma ligero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Poco he querido a Bernarda, |  | | pues a sus ojos te llevo, | 620 | | pero deseo vengarme; |  | | a vengarme voy dispuesto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | ¡Por qué notable camino |  | | vine a topar con don Diego! |  | | | |
|  | |
| *(Vanse y entran LEONARDO, con un broquel y una capa de campo, y BERNARDA teniéndole la espada, y LARA con ellos)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Por dónde fueron los dos? | 625 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¡Ay, hermano! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Luego vengo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Mirad, señor, que no tengo |  | | otro amparo sino vós. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Digo que yo vuelvo luego. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Muchos salen desa suerte, | 630 | | que los detiene la muerte, |  | | no habiendo bastado el ruego. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sois mujer y no sabéis |  | | qué leyes hay de amistad |  | | entre los hombres. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Verdad. | 635 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues por qué me detenéis? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Porque si la ley del gusto |  | | hace las leyes vencer |  | | por dar gusto a una mujer, |  | | me parece que es más justo. | 640 | | Ya se habrán los dos compuesto |  | | con la guerra o con la paz. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Basta, que sois pertinaz! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Soy mujer y soylo en esto. |  | | ¡Soltad, Leonardo, el broquel! | 645 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Del cielo es este castigo, |  | | que el pecho es para el amigo |  | | la defensa más fïel. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Soltole, ya no saldrá. |  | | Tres cosas a la mujer | 650 | | debe el hombre conceder: |  | | la primera cuando está |  | | comiendo y la da un regalo |  | | y ella le dice «por Dios, |  | | que lo habéis de comer vós, | 655 | | que ayer estuvistes malo.» |  | | La segunda, cuando intenta |  | | salir algún desafío |  | | que le dice «señor mío, |  | | corra ese agravio a mi cuenta.» | 660 | | También ha de conceder |  | | y cuando están acostados, |  | | que él muestre grandes cuidados |  | | en cosas de su placer |  | | y le detiene y porfía, | 665 | | ha de acetar y callar, |  | | que poco puede durar |  | | quien destas tres se desvía. |  | | Pésame por mi señor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Lara, toma este broquel. | 670 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Importará al dueño dél, |  | | al hombre de más valor. |  | | Pero yo sé de don Diego |  | | que no ha menester ayuda. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Lara, la fortuna es muda, | 675 | |  | | | | | |  | | | |  | | viejo el tiempo, el amor ciego, |  |  |  |  | | todos tienen sus mudanzas, |  |  |  |  | | yo hice mi diligencia |  |  |  |  | | pero de aquesta pendencia |  |  |  |  | | medí la parte que alcanzas. | 680 |  |  |  | | ¿Tiénela en esto mi hermana? |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo lo puedo saber? |  | | Parientes deben de ser |  | | desa dama toledana |  | | con quien se quiso casar, | 685 | | que no sospecho otra cosa. |  | | | |
|  | |
| *(Entran DON DIEGO y DOÑA ANA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es por todo estremo hermosa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tú no lo puedes juzgar, |  | | que el ciego que nunca mira |  | | no entiende de la color. | 690 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Don Diego viene, señor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sin duda que fue mentira, |  | | don Diego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Leonardo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | El cielo |  | | sabe con qué pena he estado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | La pendencia le han contado; | 695 | | vuestro disgusto recelo, |  | | no lo he podido escusar. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Quién fue y por qué? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Feliciano |  | | me ha sacado mano a mano |  | | al río deste lugar. | 700 | | Y en la puente de Toledo |  | | otro hombre salió a su lado, |  | | no sé si amigo o criado, |  | | si fue amistad o fue enredo. |  | | Pero en esta confusión | 705 | | llegó aqueste caballero, |  | | que desnudando el acero, |  | | mostró a mi lado afición |  | | y valor de tal manera |  | | que a todos nos sosegó. | 710 | | Feliciano se volvió |  | | y yo quedé en la ribera, |  | | donde hablé al señor don Juan, |  | | que pasa a Valladolid, |  | | que mientras que está en Madrid, | 715 | | y él y sus deudos se van, |  | | quise en agradecimiento |  | | de lo que ha hecho conmigo |  | | que en casa de tal amigo |  | | le diésemos aposento. | 720 | | Que se dé vuestro valor, |  | | que lo tenéis a merced. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | De su valor lo creed, |  | | si no lo abona mi amor |  | | vuestra merced se ha venido | 725 | | a esta casa en hora buena, |  | | de mil voluntades llena, |  | | con que podrá ser servido, |  | | aunque de un pobre escudero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Un rey puede aposentar, | 730 | | que es honra deste lugar |  | | y vós un gran caballero; |  | | y hame de venir tan grande, |  | | que en ella me he de perder. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿No es hermosa la mujer? | 735 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | A todos desde hoy nos mande |  | | vuestra merced, mi señor, |  | | en que podamos servir, |  | | que esta falta ha de suplir |  | | de su nobleza el valor. | 740 | | La casa es poca y estrecha |  | | para vuestra calidad, |  | | mas grande la voluntad |  | | si cuando sirve aprovecha. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo, mi señora, no soy | 745 | | tan cortesano que pueda |  | | dar trueco desa moneda |  | | con que ya pagado estoy. |  | | Que será volveros cobre |  | | al oro que me ofrecéis; | 750 | | pero en fin enriquecéis |  | | de favor huésped tan pobre, |  | | que es oficio de vós digno |  | | llegad sillas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mejor fuera |  | |  | | | | | |  | | | |  | | que aposento se le diera, | 755 |  |  |  | | que viene, en fin, de camino. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Toda la noche corrí |  | | y una mala posta hallé |  | | con que cansado quedé, |  | | aunque fue, cuando salí. | 760 | | Pero bien podré pasar |  | | hasta la noche. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No es justo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | No, porque estaréis sin gusto, |  | | sin dormir, ni descansar. |  | | ¿Dónde está Rosela? | 765 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Aquí para serviros estoy. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | A que os aderecen voy |  | | donde descanséis. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Por mí |  | | suplícoos que no toméis |  | | trabajo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Señor don Juan, | 770 | | todos a serviros van; |  | | descansad y cenaréis, |  | | que la llaneza es tan grande |  | | que escusa mil cumplimientos. |  | | Llevadle a los aposentos, | 775 | | Lara, que mi hermana os mande |  | | y vengan otros crïados; |  | | que le descalcen haced. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si ansí recibo merced |  | | todos están disculpados. | 780 | | Ya no le culpo a don Diego |  | | de que se detenga aquí. |  | | Desde que a Bernarda vi, |  | | tocan los celos a fuego. |  | | Amé a don Diego sin ver | 785 | | a don Diego como esposo. |  | | Vile y vi que era forzoso |  | | morir quien ha de querer, |  | | pues no sabiendo quien era |  | | dije en viéndole, olvidado | 790 | | del que amaba imaginado, |  | | antes que a don Diego viera; |  | | pues ya estoy aquí, los buenos |  | | nunca vuelven paso atrás. |  | | Pero quien hizo lo más, | 795 | | sabrá salir de lo menos. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Que es tan noble? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Lo que os digo |  | | es infalible verdad; |  | | besará a su Majestad |  | | los pies en viendo un amigo | 800 | | y volverá por aquí. |  | | Si pudiésedes coger |  | | este hombre no hay más que hacer. |  | | Y dejadme hacer a mí |  | | que una cruz honra un linaje, | 805 | | aunque hay hartas en el vuestro. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Honrado es, por Dios, el nuestro |  | | y perdonad que os ataje, |  | | que ha sido tanto el contento |  | | de que hayáis asegurado, | 810 | | con lo que me habéis tratado, |  | | mi alterado pensamiento, |  | | que lo estimo en mucho más |  | | que si ya a don Juan tuviera |  | | por mío. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué manera | 815 | | os pude alterar jamás? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Yo pensé que esta pendencia |  | | nacida de Feliciano, |  | | mozo, aunque honrado, liviano, |  | | fue celosa diferencia. | 820 | | Y viendo que me ofrecéis |  | | a don Juan para cuñado |  | | veo que no sois culpado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Agravio, por Dios, me hacéis |  | | pero no quiero quejarme | 825 | | de tan justo pensamiento, |  | | pues tuvo, en efeto, intento, |  | | Feliciano de matarme |  | | fundado en celos tan locos, |  | | valentías y desprecios. | 830 | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Porque son tantos los necios, |  | | son los discretos tan pocos. |  | | Venid, que le quiero hacer |  | | a don Juan un gran presente. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tratadle como a pariente, | 835 | | que por Dios que lo ha de ser. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Un jaez le quiero dar |  | | que vale dos mil ducados. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | De los nobles obligados |  | | todo se puede fïar. | 840 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Dos espadas de a caballo |  | | de Francisco Ruiz de un filo |  | | tengo famosas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Estilo |  | | me parece el obligallo |  | | para que os cobre afición, | 845 | | aunque no era menester |  | | porque es dalle tal mujer |  | | la mayor obligación. |  | | | |
|  | |
| *(Vanse y salen DOÑA ANA y LARA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A la puente le hallaréis. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | ¿Cómo se llama? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Montalvo. | 850 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | Estará ya puesto en salvo |  | | viendo que reñido habéis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Allí debe de esperarme. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | Voyle a buscar. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Es sin duda |  | | que allí me aguarda o que acuda | 855 | | dentro de un hora a buscarme. |  | | Buenos andamos, amor, |  | | los que a tu gusto sujetas. |  | | ¿Qué voluntad no inquietas? |  | | ¿Quién no teme tu rigor? | 860 | | ¿Quién me dijera en Toledo |  | | que don Diego me burlara, |  | | que yo en Madrid le buscara |  | | con tan peregrino enredo? |  | | La casa de mi enemiga | 865 | | tengo ya por aposento, |  | | don Diego está muy contento |  | | de ver que su intento siga. |  | | Pero el caballo troyano |  | | que ahora está con sosiego, | 870 | | pondrá a vuestra casa fuego |  | | y será su intento vano. |  | | | |
|  | |
| *(Entra ROSELA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Mi señora me ha mandado |  | | descalce a vuestra merced. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Bueno a fe, tanta merced | 875 | | agradézcole el cuidado. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Siéntese en aquesta silla, |  | | las botas le quitaré. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | No es de mal talle, a la fe, |  | | la señora fregoncilla. | 880 | | *(Siéntase en una silla)* |  | | Ya estoy sentado, quitadme |  | | esas espuelas que creo |  | | que ha parado mi deseo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | Ya las quito. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Perdonadme, |  | | que no parece crïado | 885 | | de los que truje conmigo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | ¿Tiraré? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Quedito os digo, |  | | quedo, que soy delicado. |  | | ¡Ay, Jesús, que me habéis muerto! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Tenéis los pies de alfeñique. | 890 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Siento que el aire me pique, |  | | pero hagamos un concierto. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | ¿Cómo ansí? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Veníos acá |  | | esta noche. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay qué bellaco! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Mas que si un escudo saco, | 895 | | ¿que la abrazo cuánto va? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | Desvíese. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ea, bobilla, |  | | hazte niña de las Gadas, |  | | como que no sepan todas |  | | esta amorosa cartilla. | 900 | | Vive Dios, que si conmigo |  | | fregoniza a lo lacayo, |  | | que la he dar al soslayo |  | | dos mojadas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Quedo, amigo, |  | | no se haga fanfarrón. | 905 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Pues abráceme. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No quiero. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Por qué? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Porque es caballero |  | |  | | | | | |  | | | |  | | toledano y socarrón. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Esfuérzome a parecer |  | | hombre, quiérola abrazar. | 910 | | Hoy por mía has de quedar |  | | y venme esta noche a ver. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Adviértole que me abraza |  | | por fuerza. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Harto bien, por Dios |  | | | |
|  | |
| *(Entra BERNARDA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Visto nos han a los dos. | 915 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Calla, que yo daré traza |  | | para que lo tenga a bien. |  | | ¡Oh, mi señora! ¿Aquí estáis? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Si tan hombre en casa entráis |  | | daros quiero el parabién. | 920 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Temí que érades casada |  | | y diciéndome que no |  | | este abrazo me llevo |  | | de albricias. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No importa nada, |  | | que bien merece Rosela | 925 | | que tanta merced le hagáis. |  | | ¿Pero por qué me estimáis |  | | libre, si esto no es cautela? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Porque después que os miré |  | | me nacieron mil deseos. | 930 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Así os arrojáis? ¡Teneos! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tenedme asido a mi fe. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Es lenguaje toledano; |  | | os hace tan lisonjero... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A lo toledano os quiero | 935 | | y muero a lo cortesano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Como hay allá tantas damas |  | | traéis los filos agudos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Hablarán con vós los mudos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Ve, Rosela, a hacer las camas | 940 | | y enfunde esas almohadas |  | | que al señor don Juan saqué. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Labrásteslasvós? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No sé. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A fe que están bien labradas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Desviaos, ¿eso intentáis? | 945 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | La holanda pensé que asía, |  | | lo blanco y blando podía |  | | engañarme. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Bueno andáis, |  | | entraos acostar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Con quién? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | Con vós mismo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ya, por Dios, | 950 | | que aunque no lo pensáis vós |  | | dormís conmigo también. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si os llevo en mi pecho |  | | no me lo podéis negar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Despierta quisiera estar. | 955 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Bueno por Dios, esto es hecho. |  | | ¡Oh!, blandura de Madrid, |  | | ¿hay cosa más de estimar? |  | | La presa os he de quitar, |  | | traidor de Valladolid. | 960 | | Que ha de ser don Diego mío, |  | | tarde o temprano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué habláis |  | | a solas? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tan bella estáis |  | | que me acerco y me desvío |  | | como mariposa al fuego. | 965 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Celosa estoy, que es galán |  | | por todo estremo don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Que os vais acostar os ruego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Guiadme vós. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Por aquí |  | | habéis de entrar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Voy seguro? | 970 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Mas, ¿que la abraza a lo escuro? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Venid delante de mí, |  | | que es la luz tan necesaria. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Ya no me fío de vós. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues segura va por Dios, | 975 | | que hay llaneza temeraria. |  | | | |
| **Acto III** | |
|  | |
| *Salen DON DIEGO Dávalos y MENDOZA* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Que has andado en esos pasos? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Después que a Toledo has ido, |  | | Mendoza, me han sucedido |  | | todos estos varios casos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y que al toledano tienes | 5 | | en casa? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Trájele aquí |  | | por regalarle. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay de mí! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Triste de Toledo vienes, |  | | ¿qué nuevas hay por allá? |  | | ¿De mí no se trata nada? | 10 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Ya está la novia olvidada. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús! ¿Olvidada está? |  | | | |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Estalo de tal manera |  | | que no sé della, por Dios, |  | | porque quedamos los dos | 15 | | de concierto en la ribera |  | | que solo en Madrid entrase. |  | | Hablé a don Diego y volví |  | | pero ya ni estaba allí |  | | ni sé que más me esperase. | 20 | | Que a Montalvo solo hallé |  | | con este mismo cuidado |  | | y ansí habiendo imaginado |  | | que arrepentida se fue |  | | dimos la vuelta a Toledo, | 25 | | donde jamás pareció |  | | y ansí vuelvo solo yo |  | | lleno de congoja y miedo, |  | | donde no hallándola aquí, |  | | pienso que desesperada | 30 | | hizo más larga jornada. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué estás hablando entre ti? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Pensando, señor, estoy |  | | quién sea ese toledano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tan galán, que a Feliciano | 35 | | con él pesadumbre doy |  | | porque le he dado licencia |  | | para que a Bernarda hablase, |  | | aunque me pesa que pase |  | | de justa correspondencia. | 40 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Pues qué ha hecho? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | He sospechado |  | | que le va queriendo bien, |  | | y aunque con ella también |  | | su casamiento he tratado, |  | | era porque imaginé | 45 | | no lo había de sentir, |  | | y heme pensado morir |  | | después que lo concerté. |  | | Que mi ánimo es partirme |  | | a Toledo, a ver mi esposa, | 50 | | ansí por ser justa cosa, |  | | como por verla tan firme. |  | | Pero los celos han hecho |  | | tan nuevos lazos en mí, |  | | que cuando salga de aquí | 55 | | será sin alma en el pecho. |  | | | |
|  | |
|  |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Esforzar es justa cosa |  | | este amor, pues la desmaya, |  | | porque a Toledo no vaya |  | | donde ya no está su esposa. | 60 | | Afligido estoy, por Dios, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | a buen tiempo iré a Toledo. |  |  |  |  | | Si a doña Ana halla no puedo |  |  |  |  | | concertar, quiero a los dos, |  |  |  |  | | y quiéranse enhorabuena, | 65 |  |  |  | | porque no se eche de ver |  |  |  |  | | la falta desta mujer |  |  |  |  | | a quien ha muerto la pena. |  |  |  |  | | Porque allá con tanta están, |  |  |  |  | | que han aumentado las mías. | 70 |  |  |  | | | |
|  | |
| *(Sale LEONARDO, hermano de BERNARDA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Daremos los buenos días, |  | | don Diego, al señor don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Como fuéredes servido. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Es Mendoza? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Sí, señor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es mi correo mayor. | 75 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Seas, Mendoza, bienvenido; |  | | no paras, nunca estás quedo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Soy medio entre dos amantes, |  | | que no hay lunas semejantes. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Dónde has estado? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | En Toledo. | 80 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Y cómo queda la esposa |  | | del señor don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Buena, |  | | porque está con menos pena |  | | de su ausencia. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Justa cosa |  | | merece mayor olvido. | 85 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Que no lo será sospecho |  | | y que está medio deshecho |  | | me dijo anteayer Leonido |  | | y mi señora doña Ana |  | | en un monasterio. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Haremos | 90 | | que ablande tantos estremos |  | | escribiéndole mañana |  | | y el día que allá me vea |  | | del monasterio saldrá. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Señor, enojada está; | 95 | | pienso que imposible sea. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Como esto un marido acaba, |  | | presto nos habremos de ir. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Don Juan se sale a vestir. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Ya lo estad, pues que se lava. | 100 | | | |
|  | |
| *(DOÑA ANA, con una ropa de levantar y una montera,*  *una valona de hombre, los puños alzados, ROSELA, echándole agua con una fuente y LARA, con toalla)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Buenos días, caballeros. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Con tal visita serán |  | | muy buenos. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Este es don Juan. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Dónde bueno? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Solo a veros. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Cielos!, ¿que doña Ana está | 105 | | en su casa de don Diego? |  | | Loco estuve; estuve ciego |  | | cuando la buscaba allá. |  | | ¡Lo que sabe esta mujer! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Muestra, Lara, esa toalla. | 110 | | *(Échale la toalla)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Podré hablalla? Quiero hablalla, |  | | que ella sabrá responder, |  | | que mujer tan entendida |  | | no se turbará de verme. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Duérmese bien? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Bien se duerme. | 115 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué manos! Estoy perdida. |  | | ¡Qué cara! Ya no me espanto |  | | que mi ama pierda el seso. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay tan estraño suceso? |  | | ¿Cómo me olvidaba tanto, | 120 | | señor don Juan? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Es Mendoza? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Conoceisle? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Es grande amigo; |  | | estuvo un tiempo conmigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Lo que mi alma se goza |  | | con vós no lo digo aquí, | 125 | | que a su tiempo lo diré. |  | | *(Vase poniendo los puños y los botones poco a poco DOÑA ANA, y prosigue MENDOZA)* |  | | ¿Dónde vais? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo no lo sé, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | para la Corte salí |  |  |  |  | | y de aquestos caballeros |  |  |  |  | | he sido tan regalado | 130 |  |  |  | | que a servillos me he quedado. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Cuánto me alegro de veros!; |  | | por el hábito miraba. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Allá lo pienso poner. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué más pruebas hay que hacer? | 135 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Es Santiago o Calatrava? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A Calatrava escogí. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Bueno queda vuestro tío. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Vístele? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Es gran señor mío. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué haces, Mendoza, aquí? | 140 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | El señor don Diego trata |  | | casarse en Toledo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Bien? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Y sirvo yo allá también, |  | | que propiamente retrata. |  | | *(Aparte)* |  | | Un caballero discreto | 145 | | o mujer de gran valor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sirves al hombre mejor |  | | de España. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Yo os lo prometo, |  | | ¿agrádaos su talle y trato? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Mendoza!, estoy perdida, | 150 | | no he visto en toda mi vida |  | | tal hombre, pero es ingrato; |  | | tomad esta ropa allá. |  | | *(Da la ropa)* |  | | Dame, Lara, un herreruelo, |  | | capa y sombrero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | En un vuelo. | 155 | | Rosela. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | Voy. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LARA | |  |  | | --- | --- | | ¿Aquí está? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Dónde quieres ir? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Iré. |  | | *(Toma espada y herreruelo)* |  | | A misa a la Concepción. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sabed si hay en la Pasión |  | | misa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Por allí entraré; | 160 | | veámonos, seó Mendoza. |  | | | |
|  | |
| *(Vase DOÑA ANA quitándose todos el sombrero)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Siempre os tengo de servir? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Lara, con él puedes ir. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Gentil mozo. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Hermosa moza, |  | | no estoy en mí de contento. | 165 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Di, Mendoza: ¿tú has servido |  | | a este don Juan? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Suyo he sido |  | | y haberle dejado siento; |  | | su madre me despidió |  | | por cierta dueña de casa. | 170 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Tiene alguna renta? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Pasa |  | | de cuatro mil, pienso yo. |  | | Y tiene bien que heredar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Mucho emprendemos, don Diego. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Dejalde que esté bien ciego, | 175 | | que él mismo os ha de rogar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Yo tengo fuera que hacer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Y yo tengo que escribir, |  | | aunque con vós quiero ir. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | No, que luego he de volver. | 180 | | | |
|  | |
| *(Vanse LEONARDO y DON DIEGO solos)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo estamos de la cuenta, |  | | Rosela, del otro día? |  | | ¿Podré pensar que eres mía? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Mucho pierde quien se ausenta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo ansí, pesia a mi abuelo, | 185 | | esto tenemos ahora? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿Mudándose mi señora |  | | también yo me mudo? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Apelo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No hay qué tratar, ya no hay cosa |  | | como la dejaste en casa. | 190 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | En ausencia que no pasa. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Es la mudanza forzosa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Desde que vi, lo temía; |  | | la Luna con arrebol. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué piensas tú que el Sol | 195 | | viene al mundo cada día? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Por qué? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Porque su presencia |  | |  | | | | | |  | | | |  | | ausenta dos mil ñublados |  |  |  |  | | ladrones y enamorados |  |  |  |  | | que se atrevan en su ausencia. | 200 |  |  |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Qué hay de Bernarda? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Que adora |  | | al toledano don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Tiene razón, que es galán. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | A cuanto mira enamora, |  | | ¡ay de mí! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Suspiras? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Sí. | 205 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Qué tienes? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | El mismo mal. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Pues quiéresle? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Estoy mortal. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Y él a quién se rinde? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | A mí. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Ha te lo dicho? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Mil veces |  | | que le descalzo y desnudo. | 210 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿No te ha gozado? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Bien pudo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Qué hermosos tres almueces; |  | | si hubiera con qué moler, |  | | jugaran las tres aquí, |  | | cada una para sí, | 215 | | que juntas no puede ser. |  | | En fin, ¿tú me has olvidado? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No es disculpa suficiente |  | | este ángel. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Estar yo ausente |  | | mayor disculpa te ha dado. | 220 | | En mi vida me enojé |  | | porque ausente me olvidasen, |  | | que como dos horas pasen |  | | bastante disculpa fue. |  | | Pero pésame que alabes | 225 | | ese medio hombre. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿Medio hombre? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Y aun le sobra el medio nombre. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Poco de sus cosas sabes; |  | | es valiente como un Cid. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Aquel niño, aquel enano... | 230 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Bueno es eso, es toledano |  | | y trasplantado en Madrid. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Bravamente comes pollos, |  | | reniego de mí. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Detente! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Valiente aquel? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Muy valiente. | 235 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Quedito molde de tollos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Estampa de majaderos, |  | | yo puedo hablar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Yo matalla. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | ¿Celitos? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | Quiero engañalla. |  | | Óyete, lechón sin cueros. | 240 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Óyete, cuero sin lío. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Pues, señora pesebrera, |  | | conmigo se estrella afuera. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No haya más, Mendoza mío, |  | | que soy tuya. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿El toledano vive? | 245 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | No. | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Pues quién? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ROSELA | |  | | --- | | Tú. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Toca. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Camina y calla la boca. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué blanda tienes la mano! |  | | | |
|  | |
|  |  |
|  | |
| *(Vanse, y sale FELICIANO, DOÑA ANA y LARA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Sabiendo que aquí vivís |  | | os espero para hablaros. | 250 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Y yo he deseado hallaros |  | | para ver lo que sentís |  | | de aquel pasado disgusto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Lejos voy de enemistad |  | | y dais a mi voluntad, | 255 | | señor don Juan, premio injusto. |  | | Creed que soy vuestro amigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si lo supiera no hablara |  | | desta suerte, antes me holgara, |  | | que tratárades conmigo | 260 | | de cosas que os cuestan tanto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Cuéstanme el alma y la vida; |  | | hoy mi esperanza perdida |  | | a vuestros rayos levanto. |  | | Quiéroos decir lo que pasa, | 265 | | aunque abreviando de estremos |  | | si es que estar solos podemos. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Lara? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LARA | |  | | --- | | Señor. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Vete a casa. |  | | *(Vase LARA)* |  | | Por aquestecimenterio |  | | nos podemos pasear. | 270 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Su Cruz os puedo jurar |  | | que ha sido hallarnos misterio, |  | | pues de no haberos hallado, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | que acabara con don Diego. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Soy su amigo, habladme os ruego | 275 | | en sus negocios templado, |  | | porque es ofenderme. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Oíd, |  | | que yo os responderé luego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Ya escucho. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Cuando don Diego |  | | Dávalos vino a Madrid, | 280 | | había más de dos años |  | | que yo a Leonarda servía |  | | y aunque della no tenía |  | | favores, tenía engaños. |  | | Y engaños tan bién fundados, | 285 | | que estuvo a pique de ser |  | | muchas veces mi mujer, |  | | bien lo saben sus crïados. |  | | Si en aquesta posesión |  | | pudo poner tu esperanza, | 290 | | no es cosa que agravio alcanza |  | | al bien de mi pretensión. |  | | Pero si él iba a casarse |  | | con tanto gusto y contento, |  | | quitarme mi casamiento, | 295 | | ¿con qué puede disculparse? |  | | Demás que por Dios del cielo |  | | que me dicen que doña Ana |  | | es un sol en cifra humana |  | | y un ángel en mortal velo. | 300 | | ¿Qué quiere este hombre casado? |  | | Si la firma al hombre obliga, |  | | que es grande para su amiga |  | | Bernarda y yo soy honrado. |  | | Y si palabra me dio | 305 | | en el campo, no ha cumplido |  | | la fe que me ha prometido, |  | | pues a su casa os llevó, |  | | donde me dicen que andáis |  | | della tan enamorado | 310 | | que estáis ya medio casado |  | | o que casaros tratáis. |  | | Declaradme esos enredos, |  | | que somos muchos maridos |  | | y de tantos escogidos | 315 | | han de nacer muchos miedos. |  | | Por Dios que pues sois, don Juan, |  | | caballero tan honrado, |  | | tan a vós mismo obligado, |  | | cuanto los nobles lo están, | 320 | | volváis por mi honor aquí |  | | poniendo en esto remedio, |  | | que a no estar vós de por medio |  | | nunca lo tratara ansí. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Que yo disculpe a don Diego | 325 | | no es cosa puesta en razón |  | | ni que en tanta confusión |  | | quiera añadir leña al fuego. |  | | Conozco que está culpado |  | | y que no ha cumplido bien | 330 | | con su nobleza y con quien |  | | le tiene tan obligado. |  | | Que la señora doña Ana |  | | es mi deuda y mereciera |  | | que con su merced tuviera | 335 | | correspondencia más llana. |  | | Que ha sido muy grande afrenta |  | | suya y nuestra haber dejado |  | | casamiento tan honrado |  | | por la variedad que intenta. | 340 | | Y así digo que desde hoy |  | | seré muy de vuestra parte |  | | porque deste honor se aparte |  | | de quien ofendido estoy. |  | | Que cuando le defendí | 345 | | en el campo no sabía |  | | quién era y la ofensa mía. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Pues qué es lo que haréis por mí? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Más de lo que vós pensáis. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿A Bernarda queréis? | 350 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Tanto como conocéis |  | | de lo que en ella miráis. |  | | Porque sola su hermosura |  | | pudiera igualar mi amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sufriréis cierto favor | 355 | |  | | | | | |  | | | |  | | que hacerme agora procura |  |  |  |  | | si resulta en vuestro bien. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Si como no pierda honor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Celoso de vuestro amor |  | | quiere estorbar que os la den | 360 | | Don Diego con un enredo |  | | y concierta con Leonardo |  | | pintándome muy gallardo |  | | y lo mejor de Toledo. |  | | Que me la dé por mujer, | 365 | | el codicioso de hacienda, |  | | ha querido que ella entienda |  | | que puede venirlo a ser. |  | | Ella pensando que ya |  | | está acabado conmigo, | 370 | | a todo cuanto le digo |  | | tanto crédito me da, |  | | que esta noche ha de venir |  | | a mi aposento en secreto. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¡Ay de mí! | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si sois discreto | 375 | | con vós habrá de salir. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿De qué suerte? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | En viendo acaso |  | | salir a los dos amigos |  | | que tenéis por enemigos |  | | habéis de alargar el paso | 380 | | y entraros en mi aposento, |  | | donde yo os esconderé. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | ¿Fiaré de vós? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Soy en fe |  | | lo que en luz el firmamento. |  | | Poneos en frente de casa | 385 | | y entraos porque allí os espero. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Sois noble, sois caballero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Diferente amor me abrasa |  | | que el de Bernarda. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Eso creo |  | | y que veis mis desatinos. | 390 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Porque de varios caminos |  | | voy al fin de mi deseo. |  | | | |
|  | |
| *(Entra DON DIEGO y BERNARDA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Vós no lo habéis concertado |  | | que me ponéis culpa a mí? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | De Feliciano creí | 395 | | que era caballero honrado |  | | y que verdad me decía |  | | y viéndole vuestro dueño |  | | hice despertar del sueño |  | | la loca esperanza mía. | 400 | | Y para vengarme dél, |  | | el bien le quise quitar |  | | y ansí os intenté casar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Los ojos he puesto en él |  | | como en quien es mi marido, | 405 | | y bien nos está, por Dios, |  | | el casamiento a los dos, |  | | que no lo impidáis os pido. |  | | Porque ansí vós cumpliréis |  | | vuestra palabra en Toledo | 410 | | y yo con mi gusto quedo |  | | y la merced que me hacéis. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Que esto he venido a escuchar? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Si vóstuvistes la culpa |  | | y ella misma es mi disculpa, | 415 | | ¿cómo me podéis culpar? |  | | No hay burlas donde hay amor |  | | que la voluntad se pasa |  | | como ajedrez de una casa, |  | | siempre a otra casa mejor. | 420 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Es mejor casa don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Por mi fe, que es un arfil |  | | como en labrado marfil. |  | | | |
|  | |
| *(Entra DOÑA ANA)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A solas hablando están. |  | | Y aunque escucharlos quisiera | 425 | | los celos no lo permiten, |  | | las ocasiones se quiten, |  | | que amando es necio el que espera. |  | | ¡Oh, mi señora! ¡Oh, don Diego! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Señor don Juan? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Mi señor. | 430 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Muero de celos. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | De amor muero. |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡En tanto mar me anego! |  | | ¿De qué se trata? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Esforzaba |  | | mi esperanza y derribola |  | | sola una palabra. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Sola? | 435 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Y no bastaba? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sobraba. |  | | ¿Pero qué palabra fue? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Decirme que os quiere a vós. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Atrevida fue, por Dios. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Es atrevida la fe. | 440 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Favoreced a don Diego. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Vós me lo rogáis? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo hago |  | | sus partes, que ansí le pago |  | | lo que le debo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Eso niego. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Si él ha rogado por mí, | 445 | | con qué le puedo pagar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Mucho me quiero agraviar |  | | de que lo digáis ansí. |  | | Fuera de que ya en Toledo |  | | le está aguardando su esposa, | 450 | | pues a quien ya se desposa, |  | | ¿qué esperanza darle puedo? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tenéis en eso razón, |  | | pero si él por vós la deja... |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Tendré yo la misma queja | 455 | | mañana en otra ocasión. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Si a doña Ana vi en mi vida, |  | | ni a doña Ana tuve amor, |  | | jamás alcancé favor, |  | | Bernarda, en cosa que os pida. | 460 | | Si desde el punto que os vi |  | | de doña Ana me acordé, |  | | como yo pago su fe, |  | | ansí me paguéis a mí. |  | | Si doña Ana ha merecido | 465 | | una carta de mi mano, |  | | que el indigno Feliciano |  | | venga a ser vuestro marido. |  | | Que pensáis vós que es doña Ana |  | | un demonio para mí, | 470 | | que cuando león nací, |  | | nació para mí cuartana. |  | | Dé lugar, don Juan, que yo |  | | por Toledo os aseguro. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Y yo por Toledo os juro | 475 | | que cuanto aquí dice oyó |  | | y que sabe su intención, |  | | como yo que aquí le escucho. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | Mucho es su amor. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues si es mucho, |  | | que le paguéis es razón. | 480 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué me mandáis vós que haga? |  | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | *[Aparte]* | | ¡Ay triste, que se enternece! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | La que a vós bien os parece, |  | | bien es que me satisfaga. |  | | Quiero picarle por ver | 485 | | si habla de veras o no. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Lengua que tan mal habló |  | | mereciera enmudecer. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿No decís qué haré por él? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | No tiene la voluntad | 490 | | ley, ni el gusto calidad. |  | | Bien se emplea todo en él. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Queréis que le dé una mano? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué hice, triste de mí? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Don Juan lo siente. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Eso sí. | 495 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Vós, don Juan, terciáis en vano, |  | | porque en los ojos se os ve, |  | | que os pesa deste favor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Es celo de vuestro amor |  | | y es agravio de mi fe. | 500 | | Digo otra vez que si gusta |  | | de abrazaros, se lo ruego. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Que le abrace? Pues yo llego. |  | | *(Pónese en medio)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, falsa! ¡Ah, traidora! ¡Ah, injusta! |  | | Mi sospecha queda cierta, | 505 | | que habiéndote conocido, |  | | ni pueda ser tu marido |  | | como tu hermano concierta. |  | | Ni será el mundo bastante |  | | si Dios no me vuelve a hacer, | 510 | | bien digo, que soy mujer. |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, falso traidor amante!, |  | | solo probarse quería, |  | | en tu vida te he de hablar. |  | | *(Vase)* |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Detenla. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Déjala entrar. | 515 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Espera, Bernarda mía. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tente, no vayas tras ella, |  | | que tengo que hablar contigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | No has hecho oficio de amigo |  | | con mi honor delante della. | 520 | | Tratas que sea mi esposa |  | | y en mi presencia la abrazas. |  | | Todas fueron falsas trazas |  | | y una apariencia engañosa. |  | | Muero por ella, ¿qué haré? | 525 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Gozalla. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué manera |  | | pues no hay cosa que más quiera |  | | que a ti? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo te lo diré. |  | | Sácame, pues tu podrás, |  | | de la obligación que tengo | 530 | | a Leonardo, por quien vengo |  | | a sentir tus cosas más, |  | | que yo la pondré en tu mano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Tanto, Leonardo, me quiere |  | | que así mismo me prefiere. | 535 | | Digo que a Leonardo allano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues alto, yo te daré |  | | esta noche a quien deseas |  | | donde la hables y veas, |  | | y haré que contigo esté. | 540 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Cumpliraslo? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Es mi deseo, |  | | mira si podré faltar. |  | | Vete un rato a pasear |  | | que viene Leonardo y creo |  | | que es mejor que no te vea. | 545 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Mira que fío de ti. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Para servirte nací, |  | | aunque tu amor no lo crea, |  | | que es sin duda que te quiero |  | | mil veces más que a Bernarda. | 550 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Qué alma tienes tan gallarda, |  | | eres al fin caballero. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Mal conoces lo que entablo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Tu esclavo seré. | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Camina. |  | | *(Vase DON DIEGO)* |  | | Que mal don Diego adivina | 555 | | que no siento lo que hablo, |  | | pues sepa que entablo juego |  | | en que no goce la dama, |  | | porque aborrecer por fama |  | | solo puede un hombre ciego. | 560 | | | |
|  | |
| *(Entra FELICIANO)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Don Diego apenas salió |  | | cuando por la puerta entré. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | ¿Si te vio alguno? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | No sé, |  | | pienso que nadie me vio. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Éntrate en ese aposento | 565 | | y detrás de una cortina |  | | me aguarda. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  | | --- | | Voy. | | *(Éntrase, quedito)* | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Imagina |  | | que va en tus plantas el viento. |  | | Trazándose va el enredo, |  | | galán de Valladolid, | 570 | | presto veréis en Madrid |  | | qué ingenios hay en Toledo. |  | | Buen principio y favorable. |  | | *(Entra ROSELA)* |  | | Aquí amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Quiéresme dar |  | | cuatro de dos de lugar | 575 | | para que en mi amor te hable. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | *(Aparte)* Quiero el diablo que te lleve. |  | | ¿Hay tan pesada fregona? |  | | ¿Qué hay Rosela? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Esa persona |  | | hecha de rosas y nieve | 580 | | me trae tan opilada |  | | que de tristezas me muero. |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues yo soy como un acero, |  | | toma acero si te agrada. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | A las almas más remotas | 585 | | llevarás, don Juan, tras ti. |  | | No sé qué diablos me vi |  | | descalzándote las botas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Como Roldán habré sido, |  | | encantado tengo el pie. | 590 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Coz de amor sin duda fue, |  | | pues que con el pie me ha herido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Al cuero de aquellas botas |  | | es bien que culpa le den, |  | | que querer el cuero bien | 595 | | es muy propio de pelotas. |  | | Y de que este amor te encarne |  | | me admiro, aunque considero |  | | que te ha entrado por el cuero |  | | como a los más por la carne. | 600 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | No pienses que así me aprieta. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí harán, de vaqueta son. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Hasta el mismo corazón |  | | se me ha entrado la vaqueta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Digo que quererte es justo | 605 | | y que con tu amor me admiras, |  | | los hombres a los pies miras, |  | | vive Dios que tienes gusto. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | En mi vida me agradó |  | | edificio sin cimientos, | 610 | | nobleza y bajos intentos, |  | | ni fee que en traición paró. |  | | Amor con viles empleos, |  | | culebra con rostro humano, |  | | pavón con plumas lozano | 615 | | y hombre hermoso con pies feos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Por tu buen gusto, esta noche |  | | hablarte, Rosela, quiero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Baja, noche, que te espero; |  | | enluta ese negro coche. | 620 | | ¡Oh, clara Luna!, si agora |  | | amaras aquel pastor. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Miren lo que enseña amor. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Señala, mi bien, la hora |  | | para que te vaya a ver. | 625 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A las diez podrás venir, |  | | y agora te puedes ir |  | | que tengo un poco que hacer. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿No me darás una prenda? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Mi palabra no lo es? | 630 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Es mucho que prendas des |  | | para que gozarte emprenda. |  | | Dame esa mano. |  | | *(Toma la mano)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Y el vientre |  | | querrás al uso del rastro. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, mi don Juan, qué alabastro! | 635 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Quieres que Leonardo entre? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ireme por esta mano |  | | hasta los brazos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Bien puedes. |  | | *(Abrázanse)* |  | | Bueno quedo, no te enredes. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, bellaco toledano! | 640 | | *(Vase ROSELA)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, fregona de Madrid! |  | | Ya se fue, bueno va todo. |  | | | |
|  | |
| *(Sale BERNARDA sola)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Es don Juan? | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | Yo soy. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿De modo |  | | que a otro me dais? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Advertid, |  | | mi bien, que ha sido probaros | 645 | | y cumplir con aquel loco, |  | | porque todo el mundo es poco |  | | para dejar de gozaros. |  | | Sois el alma desta vida, |  | | sois primero movimiento | 650 | | de mi propio entendimiento, |  | | sois la cosa más querida |  | | que mis sentidos conocen, |  | | los ojos por esas bellas |  | | luces porque no hay estrellas | 655 | | que como las vuestras gocen. |  | |  | | | | | |  | | | |  | | Los oídos escuchando |  |  |  |  | | ese ingenio peregrino, |  |  |  |  | | que el instrumento divino |  |  |  |  | | estuvo perficionando. | 660 |  |  |  | | No hay jardín de varias flores |  |  |  |  | | como vós, no hay blanda pluma |  |  |  |  | | como tocaros, en suma, |  |  |  |  | | sois toda un templo de amores, |  |  |  |  | | donde el gusto, a quien he puesto | 665 |  |  |  | | por el último sentido, |  |  |  |  | | con palabra de marido |  |  |  |  | | está a gozaros dispuesto. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Eso basta para indicio |  | | de vuestro engaño, advertid | 670 | | que habéis pasado a Madrid |  | | de Toledo el artificio. |  | | Por mi vida que con menos |  | | ganastes mi voluntad, |  | | mas nunca tratan verdad | 675 | | amores de engaños llenos. |  | | Yo os deseo y es de suerte, |  | | que esta, don Juan, reducida |  | | a vuestro gusto mi vida |  | | y a vuestro desdén mi muerte. | 680 | | Quiéroos creer, porque amor |  | | es muy fácil en creer, |  | | y porque en una mujer |  | | tiene más fuerza su error. |  | | Esforzad vuestro deseo | 685 | | con mi hermano y estorbad |  | | esta loca voluntad |  | | que ahora en don Diego veo; |  | | pues de pasar adelante |  | | tanto peligro resulta. | 690 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Leonardo no dificulta |  | | mi gusto y si es importante |  | | don Diego para impedir |  | | lo que los dos pretendemos, |  | | si vós queréis, remediemos | 695 | | el peligro por venir; |  | | que es alta razón de estado |  | | entre discretos hacer |  | | que el mal, cuando venga a ser, |  | | venga estando remediado. | 700 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué remedio pensáis vós |  | | que bastara con don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Darle con la capa, y ciego |  | | juntarnos, mi bien, los dos. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  | | --- | | ¿Dónde? | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | En mi propio aposento, | 705 | | y llamando a vuestro hermano, |  | | daros de esposo la mano |  | | y firmar el casamiento. |  | | Y que don Diego en buen hora |  | | se vaya con su mujer. | 710 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Peligro puede correr |  | | mi fama. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo, señora? |  | | Juramento hago al cielo |  | | de no tocaros la mano. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Lo que es llamar a mi hermano | 715 | | me va quitando el recelo. |  | | ¿A qué hora iré? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | A las diez |  | | me parece conveniente. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | ¿Mi hermano ha de estar presente? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Bernarda, el cielo es juez | 720 | | de la palabra que os doy. |  | | Si ofensa os hiciere, digo |  | | que un rayo sea mi castigo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Ahora bien segura voy |  | | de que habéis de proceder | 725 | | como noble en tal lugar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Segura podéis estar |  | | como con otra mujer. |  | | | |
|  | |
| *(Vanse. Sale CLARINO y MONTALVO)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Ya estás, señor, en Madrid, |  | | a muy buen tiempo has llegado. | 730 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | ¿Por ventura habrá pasado |  | | doña Ana a Valladolid? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Si don Diego se volvió, |  | | no dudo que le siguiese, |  | | pero dudo que volviese, | 735 | | si no es que la conoció. |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | La casa deste Leonardo |  | | ¿dónde es? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Mendoza decía |  | | que a la Pasión. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Sí sería, | 740 | | pues tanta pasión aguardo. |  | | En ella estará don Diego |  | | y él sabrá desta mujer |  | | cuyo amor, y amor sin ver, |  | | fue de nuestras honras fuego. | 745 | | Era venir en su traje |  | | esto, que disculpa tiene, |  | | pero es venir como viene |  | | deshonra de su linaje. |  | | ¿Hay tan grande atrevimiento? | 750 | | ¿Hay tal locura? ¿Hay tal cosa? |  | | Una mujer virtüosa |  | | y de tal recogimiento, |  | | ciega de locos antojos |  | | se puso ajenos vestidos, | 755 | | amando por los oídos |  | | lo que no vio por los ojos. |  | | ¿A quién dirán que es verdad, |  | | que no digan que es mentira? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Mucho desdice la ira | 760 | | de la anciana gravedad. |  | | Repórtate y considera |  | | que no es la primer mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Flaqueza tiene su ser |  | | desde la mujer primera. | 765 | | Pierdo, Montalvo, el honor |  | | en la desdicha presente, |  | | por amigo, por pariente, |  | | por anciano y por tutor. |  | | ¿Y es posible que la veen | 770 | | ojos que no la conocen? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Por Dios que la desconocen, |  | | puesto que muy cerca estén. |  | | Porque el brío es varonil |  | | que importa en transformaciones | 775 | | y muy de hombre las razones. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Tiene un ingenio sutil, |  | | pero yo juzgo por ciego |  | | el que no vee que es mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Ya lo debe de saber, | 780 | | señor Clarino, don Diego. |  | | La noche pasa y las calles, |  | | aunque grandes y anchas son, |  | | se escurecen; ya es razón |  | | que en ellas tus quejas calles. | 785 | | A la mañana podrás |  | | buscar a Leonardo y luego |  | | tendrás nuevas de don Diego, |  | | y de doña Ana sabrás. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | No he de dormir en Madrid | 790 | | con un pesar tan crüel |  | | hasta ver si están en él |  | | o van a Valladolid. |  | | Camina hacia la Pasión, |  | | que yo sabré preguntar. | 795 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Luces hay y a quien hablar. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Verdad dices, tiendas son. |  | | Allí nos informarán |  | | tan bien como a la mañana |  | | cómo se llama doña Ana. | 800 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Ella dijo que don Juan. |  | | ¿Qué le dirás a don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | ¿Que es don Juan un hijo mío? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | De tu cordura confío |  | | que le hablarás con sosiego. | 805 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Tú verás mi proceder |  | | aunque más enojo tenga. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | No hay desdicha que no venga |  | | por ocasión de mujer. |  | | | |
|  | |
| *(Vanse. Salen DOÑA ANA, que es DON JUAN y MENDOZA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ya me tienes entendida. | 810 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Y me parece muy bien. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Solo en que en Madrid estén |  | | me va, Mendoza, la vida. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | No habrá Dios amanecido |  | | cuando a Toledo me parta | 815 | | y dé a Clarino esta carta; |  | |  | | | | | |  | | | |  | | tú puedes mudar vestido. |  |  |  |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Déjame, tú, hacer a mí |  | | lo que tocare a mi parte. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué resulta de avisarte? | 820 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | No perdamos tiempo aquí. |  | | Yo me entro en el aposento, |  | | mira que has de encaminar |  | | a Bernarda a otro lugar. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Ya estoy en tu pensamiento. | 825 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y sabes lo que has de hacer |  | | con don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Está segura. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ayúdame, noche escura. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Dime: ¿ha estado sin comer |  | | Feliciano todo el día? | 830 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | No, que yo propia le di |  | | una conserva. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Eso sí. |  | | ¿Y hubo vino? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, noche mía! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | Entra, no temas. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Tembla[n]do |  | | pongo en el suelo los pies. | 835 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Efeto del temor es. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Di que le estoy esperando. |  | | *(Vase DOÑA ANA)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Mujer fue la primera que en la tierra |  | | puso tanta discordia en los mortales; |  | | mujer enseñó letras con las cuales | 840 | | todas las ciencias el ingenio encierra. |  | | Mujer nos rinde y nuestros rostros hierra |  | | y pone hasta en las almas las señales. |  | | Mujer pudo pisar cetros reales |  | | y mujer fue inventora de la guerra. | 845 | | Mujer con su flaqueza abrasa el mundo. |  | | Puso por tierra a Troya, a Grecia, a España. |  | | La ciencia y la virtud tienen su nombre. |  | | Es ángel, aunque es furia del profundo, |  | | y con ser la mujer quien tanto daña, | 850 | | donde ella falta, no se alegra el hombre. |  | | | |
|  | |
| *(Sale BERNARDA, sola)* |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Don Juan me ha dicho que está |  | | aguardándome Mendoza. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  | | --- | | ¿Es Bernarda? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Es quien hoy goza |  | | el premio que amor le da. | 855 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Entra al primer aposento, |  | | que al segundo esta don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | En los oídos me dan |  | | las reliquias de su acento. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | No pares de ningún modo, | 860 | | como digo, en el primero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | No hay bien como el bien que espero; |  | | no hay honor, piérdase todo. |  | | *(Vase BERNARDA)* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Entrose, bien se va haciendo. |  | | | |
|  | |
| *(Entra DON DIEGO, de noche)* |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Es Mendoza? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Mi señor. | 865 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Entró Bernarda? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Y de amor |  | | tuyo se va deshaciendo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay dicha como la mía, |  | | que en fin la viste pasar? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Agora acaba de entrar. | 870 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Qué prolijo ha sido el día, |  | | no pensé que se acabara. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Díjome que tengas cuenta |  | | que al entrar nadie te sienta; |  | | y sobre todo repara | 875 | | que te aguarda en el primero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Así lo dijo don Juan. |  | | *(Éntrase)* |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Buenos por mi vida van. |  | |  | | | | | |  | | | |  | | Esto es hecho ya, ¿qué espero? |  |  |  |  | | Voy donde Rosela aguarda, | 880 |  |  |  | | que a don Juan espera ver, |  |  |  |  | | a fe, que han de conocer |  |  |  |  | | la toledana gallarda. |  |  |  |  | | | |
|  | |
| *(Éntrase, salen CLARINO, LEONARDO, MONTALVO con una hacha)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Aquí me podéis hablar, |  | | que sin duda le importaba | 885 | | no menos que honor, vida, |  | | a quien a tal hora llama. |  | | Agradeced que os abrieron |  | | por respetar vuestras canas, |  | | y porque traigo estos días | 890 | | cierta sospecha en el alma. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Yo vengo desde Toledo, |  | | señor Leonardo, con ansia, |  | | de hallar a don Diego aquí, |  | | que soy deudo de doña Ana. | 895 | | Vame la vida y la honra |  | | en hablarle dos palabras. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Ya sé lo que le queréis |  | | y vuestra razón es llana, |  | | que habiendo os la dado a vós, | 900 | | no fue bien hecho quebrarla. |  | | Ya me dijo aquestos días |  | | que determinado estaba |  | | de ir a Toledo y hacer |  | | enmienda de tanta falta. | 905 | | ¡Hola!, llama a ese aposento |  | | y llega esa lumbre. ¡Acaba! |  | | *(Desde dentro)* |  | | ¡Ah, señor don Diego! |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién |  | | llama? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Leonardo llama. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Leonardo, si habéis sabido | 910 | | el error de vuestra hermana: |  | | siendo mi mujer, ¿qué importa? |  | | Yo la tengo y esto basta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¡Válgame el cielo!, ¿qué es esto? |  | | ¡Traidor don Diego, en mi casa! | 915 | | ¡Abre o romperé la puerta! |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CLARINO | |  | | --- | | ¡Ay, triste! | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Desdicha estraña. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Nunca yo hubiera venido. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Traidor don Diego, ¿así guardas |  | | la fe dada a los amigos? | 920 | | ¡Págasme bien la posada! |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Si es mi mujer, ¿qué te alteras? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Cuando yo te la negara, |  | | fuera disculpa. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Después |  | | sabrás, Leonardo, la causa. | 925 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sal en paz, abre la puerta, |  | | pues que tu mujer la llamas. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Digo que soy tu marido; |  | | salgamos juntos, Bernarda. |  | | | |
|  | |
| *(Salen DON DIEGO y DOÑA ANA, en hábito de mujer)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién dice que es tu mujer? | 930 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | Bernarda. | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo soy doña Ana, |  | | que he buscado a mi marido. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Lo que pasa. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Doña Ana?, ¿pues no es don Juan? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CLARINO | |  | | --- | | ¿Hija? | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Clarino, ¿aquí estabas? | 935 | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | Hecho notable. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Famoso. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CLARINO | |  | | --- | | Gran valor. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Heroica hazaña. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Don Juan, doña Ana o quién eres? |  | | Digo que estoy con Bernarda |  | | y que está en ese aposento. | 940 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Alguna desdicha falta, |  | | ¿qué dices, don Diego? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Digo |  | | que estaba dentro tu hermana. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  | | --- | | ¡Ah, Bernarda! | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Aquella voz |  | | conozco, ¡ay, terrible infamia! | 945 | | pero amor es la disculpa |  | | y tu valor quien me llama. |  | | *(Sale afuera BERNARDA)* |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | ¿Ves si tengo yo razón? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Vil mujer: ¿con quién estabas? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Con don Juan, que es mi marido. | 950 | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo, si es don Juan, doña Ana? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Yo soy doña Ana y don Juan. |  | | | |
|  | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Digo, señores, que estaba |  | | con un hombre que está dentro, |  | | aunque guardando mi fama. | 955 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hombre dentro? ¿Cómo es eso? |  | | Muestra esa hacha. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Ten la espada. |  | | | |
|  | |
| *(Sale FELICIANO)* |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Yo soy el que dentro estoy, |  | | que solo os debo palabras, |  | | porque solo he pretendido | 960 | | guardar a tu honor la cara. |  | | Feliciano soy, ¿qué miras? |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  | | --- | | ¿Qué es esto? | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Señor, yo estaba |  | | con don Juan. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Conmigo ha sido, |  | | que he dado a todo la traza. | 965 | | Yo tengo culpa de todo, |  | | porque viéndome burlada |  | | en el hábito que veis |  | | quise volver por mi fama. |  | | Y no penséis que esto es solo, | 970 | | que porque Mendoza amaba |  | | a Rosela, hice una industria |  | | con que están juntos. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué aguarda |  | | mi brazo en vengar mi injuria? |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Ya es tarde para venganzas; | 975 | | haz como cuerdo, Leonardo, |  | | pues, antes que pierdes ganas. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sal aquí, infame Rosela. |  | | | |
|  | |
| *(Sale ROSELA y MENDOZA)* |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué, mi señor, te espantas? |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | De que con un hombre estés. | 980 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ROSELA | |  |  | | --- | --- | | Conozco que fui engañado |  | | del amor de un caballero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  |  | | --- | --- | | Ya ese caballero es dama, |  | | que Mendoza está contigo. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Yo soy y no pierdes nada. | 985 | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | ¿Hay tan grande confusión? |  | | Quieres que en una palabra |  | | reduzga a paz esta guerra. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Sola tu prudencia basta. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Doña Ana y don Diego son | 990 | | marido y mujer. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo estaba |  | | ciego en los rayos del Sol, |  | | mas en mi disculpa clara, |  | | no estimé lo que no vi; |  | | lo no visto no se agravia. | 995 | | Si ella quiere, soy su esposo. |  | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA ANA | |  | | --- | | La mano le doy. | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Yo el alma. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Feliciano es caballero. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Si Feliciano llegara |  | | a pedírmela, tuviera | 1000 | | a dicha darle mi hermana. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Pues dele la mano agora. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FELICIANO | |  |  | | --- | --- | | Su esposo soy de Bernarda. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BERNARDA | |  |  | | --- | --- | | Del engaño estoy contenta. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MONTALVO | |  |  | | --- | --- | | Mendoza y Rosela faltan. | 1005 | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Yo los caso y doy en dote |  | | mil ducados y una casa. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MENDOZA | |  |  | | --- | --- | | Valen ya poco en Madrid. |  | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONARDO | |  |  | | --- | --- | | Casa donde quiera es patria. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CLARINO | |  |  | | --- | --- | | Doña Ana, don Diego y yo | 1010 | | después que juntos se hagan |  | | los tratados casamientos, |  | | con amistad confirmada, |  | | nos iremos a Toledo. |  | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON DIEGO | |  |  | | --- | --- | | Aquí, Senado, se acaba, | 1015 | | con deseo de serviros, |  | | *La gallarda toledana*. |  | | | |